

23 वां
अंक
सितम्बर, 2012



चेतना



कार्यालय, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना

चेतना परिवार



बैठे हुए (बायें से दायें) श्री समरेन्द्र चक्रवर्ती, उप महालेखाकार; श्री राम हित, वरीय उप महालेखाकार; श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल, महालेखाकार (ले० एवं ह०) बिहार पटना; श्री जॉर्ज सैमुएल, उप० महालेखाकार; मो० हाशिम अंसारी, वरीय लेखा अधिकारी।

खड़े हुए (बायें से दायें) अजीत कु० सिन्हा, सचिव (महालेखाकार); सुश्री शिवानी चन्द्रा, हिन्दी अनुवादक; अभिजीत कु० सिन्हा, सहायक लेखा अधिकारी; निरंजन प्रसाद, सहायक लेखा अधिकारी; श्रीराम पाण्डेय, सहायक लेखा अधिकारी; चन्द्र मोहन मिश्रा, वरीय लेखाकार; राजेन्द्र कुमार, पर्यवेक्षक।



चेतना

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका
तेइसवाँ अंक

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना ।
महालेखाकर भवन,
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना - 800001

“आत्मविश्वास का अर्थ है, अपने काम में अटूट श्रद्धा”
- महात्मा गाँधी -

चेतना के इस 23वें अंक में प्रकाशित सभी रचनायें लेखकों/रचनाकारों के अनुसार उनकी मौलिक एवं अप्रकाशित हैं तथा इसमें दिए गये विचार/मंतव्य उनके अपने हैं। इससे किसी प्रकार की सहमति/असहमति सम्पादक मण्डल की नहीं है।

स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना

प्रकाशन : 'चेतना'

प्रकाशक : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का
कार्यालय, 'महालेखाकार भवन,
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना -800001

अंक : तेइसवाँ
(सितम्बर 2012)

मुख पृष्ठ : दिल्ली का लाल किला

मूल्य : राजभाषा हिन्दी की अनवरत सेवा

मुद्रक : जी० बी० प्रिंटर्स
पोपुलर प्लेस
लंगरटोली चौराहा, पटना-4

चेतना परिवार

* संरक्षक *

श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना

* प्रकाशन परामर्शदातृ समिति *

श्री राम हित
वरिष्ठ उप महालेखाकार, बिहार, पटना

श्री समरेन्द्र चक्रवर्ती
उप महालेखाकार, बिहार, पटना

श्री जॉर्ज सैमुअल
उप महालेखाकार, बिहार, पटना

* प्रधान सम्पादक *

मो० हाशिम अंसारी
व० लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

* सम्पादक *

श्री निरंजन प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी

* सहायक सम्पादक *

श्री श्रीराम पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

* सहायक सम्पादक *

श्री चन्द्र मोहन मिश्र
वरिष्ठ लेखाकार

* सहायक सम्पादक *

श्री राजेन्द्र कुमार
पर्यवेक्षक, हिन्दी कक्ष

ईर्ष्या उस बिच्छू की तरह है, जो ज्वाला से घिर गया हो। अपने आपको ही डंक मारती हुई मिट जाती है।
- लुकमान -

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या:	विषय	रचना	लेखक	पृष्ठ
1	चेतना परिवार			iv
2	अनुक्रमणिका			v
3	महालेखाकार का संदेश			vi
4	वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश			vii
5	उप महालेखाकार (पेंशन) का संदेश			viii
6	उप महालेखाकार (जी०ई० एवं निधि) का संदेश			ix
7	सम्पादकीय			1
8	महालेखाकार कार्यालय में हिन्दी रिपोर्ट, हिन्दी कक्ष की गतिविधियाँ (2011-12)			3
9	“दीप जले”	(भजन)	- श्री राजेन्द्र कुमार, (पर्यवेक्षक);	7
10	“गाँधी दर्शन”	(कविता)	- श्री राजेन्द्र कुमार, (पर्यवेक्षक);	8
11	“आह”	(लेख)	- श्रीमती मुक्ता बनर्जी (डी०ई०ओ०);	9
12	“मुझे चाँद चाहिए”	(लेख)	- श्रीमती संगीता रंजन पत्नी, श्री निरंजन प्रसाद (स०ले०अ०);	12
13	“दीपावली	(कविता)	- श्री यतीश चन्द्र वर्मा (स०ले०अधि०);	17
14	“आँखों का नूर”	(कविता)	- श्री शिव शंकर तिवारी (व० लेखाकार);	18
15	“तलाक”	(लेख)	- श्री श्रीराम पाण्डेय (स०ले०अधि०);	19
16	“थका-हारा-बेचारा”	(कविता)	- श्री अश्विन अनुराग पुत्र श्री प्रेम निवास मिश्र (स०ले०अधि०);	23

17	“पुनर्जन्म”	(लेख)	- श्री धीरज कुमार (एम0टी0एस0);	26
18	“गन्ना” एक उपयोगी फसल (निबंध)		- श्री प्रमिल कुमार दूबे (डी0ई0ओ0)	27
19	“शहर से पेड़ कट गये”	(कविता)	- श्री रामेश्वर राम, (से0नि0 व0लेखाकार);	30
20	“लोग क्या कहेंगे”	(रचना)	- श्री सुरेन्द्र लाल दास (स0ले0अधि0);	31
21	“कॉलेज का वह भयावह दिन”(संस्मरण)		- श्री हरeram प्रधान, (से0नि0, पर्यवेक्षक);	34
22	“शहर से जुगनू भाग गये”	(कविता)	- श्री रामेश्वर राम, (से0नि0, व0ले0);	38
23	“भूलते-भागते क्षण”	(संस्मरण)	- श्री अमरेन्द्र कु0पाण्डेय (स0ले0अधिकारी);	39
24	“वास्तु विषयक”	(संकलन)	- श्री राम अनुग्रह प्रसाद (से0नि0, व0लेखाकार);	50
25	“इतिहास”	(कविता)	- श्री अरुण कुमार पाठक (व0 लेखाकार);	54
26	“जमीन”	(लेख)	- श्री अश्विन अनुराग, पुत्र, श्री प्रेम निवास मिश्र (स0ले0 अधि0);	55
27	“बेटी”	(कविता)	- श्री राजेन्द्र कुमार, (पर्यवेक्षक);	65
28	“हलधर किसान”	(कविता)	- श्री राजेन्द्र कुमार, (पर्यवेक्षक);	66

महालेखाकार (ले० व ह०) बिहार, पटना का



संदेश

आज बहुत ही हर्ष का विषय है कि हिंदी पखवारा के इस शुभ वेला में हमारा कार्यालय लगभग शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में संपन्न कर मुख्यालय एवं राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार हिंदी में प्रचार-प्रसार के कार्य में सराहनीय सहयोग प्रदान कर रहा है। गृह पत्रिका 'चेतना' भी इस दिशा में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इस अंक में विभिन्न अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा हिंदी के प्रति अपने समर्पण, सम्मान का परिचय कविताओं, लेखों एवं संस्मरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। मैं इस भावना एवं प्रयास हेतु सभी को साधुवाद अर्पित करता हूँ। गीता-ज्ञान का प्रकाश "दीप जले" शीर्षक कविता के माध्यम से एक सराहनीय प्रयास है।

शुभकामनाओं सहित।

इन्द्रदीप सिंह

इन्द्रदीप सिंह धारीवाल,
महालेखाकार

“यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारे मरते ही संसार तुम्हें न भूल जाए तो या तो पढ़ने योग्य रचनाओं की सृष्टि करो या वर्णन करने योग्य कर्म करो।
- बेजामिन फ्रैंकलिन -

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) बिहार, पटना का



संदेश

बहुत ही प्रसन्नता की बात है कि हिंदी पत्रिका 'चेतना' का तेइसवां अंक कार्यालय कर्मियों एवं सम्पादक मंडल के सहयोग से आज प्रकाशित हो रहा है। राजभाषा हिंदी के बहुमुखी विकास के लिए यह आवश्यक है कि हम अंग्रेजी को आवश्यकतानुसार प्रयोग करते हुए हिंदी के विकास को प्राथमिकता दें।

हिंदी ही एक ऐसी भाषा है, जिसके माध्यम से पूरे देश को एक किया जा सकता है और इसी लिए भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिंदी को केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों/उपक्रमों में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में कार्य करने की प्रतिबद्धता पर बल दिया गया है, जिसका परिणाम आज पूरे देश में देखने को मिल रहा है।

कार्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने हिंदी में कार्य कर जिस प्रकार इस कार्यालय का मान बढ़ाया है, वह सराहनीय है। इसके लिए मैं सभी को अपनी तरफ से शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

धन्यवाद।

राम हित
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन)

“जन्म के समय मनुष्य चाहे जितना भी धनवान हो, मृत्यु के समय वह सर्वथा निर्धन ही होता है।”- जर्मन लोकोक्ति -

उप महालेखाकार (लेखा एवं वी०एल०सी०) बिहार, पटना का



संदेश

हिंदी, हमारी राष्ट्रभाषा ही नहीं अपितु पूरे देश को एक सूत्र में बांधने का वह धागा व सुलभ साधन भी है, जो विभिन्न प्रान्तों को मोतियों की तरह आपस में पिरोकर एक सुन्दर माला बनाती है।

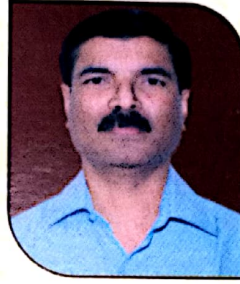
इस सन्दर्भ में निश्चित रूप से हमारी पत्रिका 'चेतना', गृह मंत्रालय (भारत सरकार) एवं मुख्यालय द्वारा जारी किए गये निर्देशों का पालन करते हुए लोगों में हिंदी के प्रति जागृति प्रदान करती है। पत्रिका के माध्यम से राष्ट्रभाषा हिंदी की प्रगति के लिए कार्यालय कर्मियों को हमारी शुभकामनायें।

समरेन्द्र चक्रवर्ती

समरेन्द्र चक्रवर्ती
उप महालेखाकार

“मनुष्य काम की अधिकता से नहीं, उसे भार समझकर अनियमित रूप से करने पर थकता है।” – श्रीराम शर्मा आचार्य –

उप महालेखाकार (पेंशन एवं निधि) बिहार, पटना का



संदेश

दिनांक 18 जनवरी, 1968 को संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित राजभाषा संकल्प में यह व्यक्त किया गया था कि हिंदी के प्रचार एवं विकास की गति बढ़ाने हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार कर उसे कार्यान्वित करने के लिए संकल्प लिया गया। फलस्वरूप आज पूरे देश में केन्द्र सरकार के कार्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों/उपक्रमों द्वारा राजभाषा हिन्दी और प्रगामी प्रयोग के लिए वार्षिक कार्यक्रम तैयार कर उसका कार्यान्वयन किया जाता है।

इस कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए जो उपलब्धियाँ इस कार्यालय द्वारा प्राप्त की गई हैं, वह सराहनीय हैं। राजभाषा के विकास के लिए हमारी कार्यालय आगे चलकर ऐसा कार्य करे, जो पूरे राष्ट्र के लिए एक मिसाल हो, ऐसी हमारी शुभकामना है।

जॉर्ज सैमुअल,
उप महालेखाकार
(पेंशन व निधि)

‘धार्मिक कथा सुनने पर, श्मशान पर, रोगियों और दुखियों को जो बुद्धि उत्पन्न होती है, वह यदि इंसान को सदा बनी रहे तो कौन ऐसा है, जो इस संसार के बंधन से मुक्त न हो जाय।’ – चाणक्य नीति-



हिंदी दिवस पर हार्दिक शुभकामनाओं के साथ इस कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'चेतना' के तेइसवें अंक को सहृदय एवं हिंदी प्रेमी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है ।

राष्ट्रभाषा हिंदी के सर्वांगीण विकास के लिए यह पत्रिका कृतसंकल्प है। सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता लाने तथा इसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से यह पत्रिका प्रकाशित की जाती रही है । पत्रिका के विकास के लिए हम सदैव प्रयत्नशील हैं । तीव्र गति एवं वेग से हो रहे तकनीकी विकास के कारण प्रतिदिन नये शब्दों का प्रचलन एवं प्रयोग किया जा रहा है । हिंदी के विकास के लिए यह आवश्यक है कि हम विश्व के अन्य भाषाओं के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलना सीखें ताकि अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर हमारी हिंदी भी शान से अपनी गरिमा एवं गौरव का स्थान पा सके ।

पिछले 62 वर्षों में राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिंदी की प्रगति सराहनीय रही है, परन्तु लक्ष्य प्राप्ति के दृष्टिकोण से पूर्णतः संतोषप्रद नहीं रही है । हिंदी भाषा के विकास के लिए प्रतिदिन हिंदी बोलने, पढ़ने और लिखने की आदत निःसंकोच रूप में डाली जाय ।

अतः आइए, आज 'हिंदी दिवस' के शुभ अवसर पर हम सभी यह संकल्प लें कि हम अपना सारा सरकारी कार्य राजभाषा हिंदी में ही करेंगे । साथ ही यह भी संकल्प लें कि हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु मार्ग में आनेवाली समस्त कठिनाईयों को दूर करने पर गंभीरता से सोचेंगे ।

पूर्व के अनुरोध को दुहराते हुए इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हमारा यह आग्रह है कि वे अपनी रचनायें, लेख, संस्मरण, निबन्ध, कविता तथा कार्यालय के कार्य-कलाप से संबंधित रचनायें आदि प्रत्येक माह

नियमित रूप से हिंदी कक्ष को देते रहें ताकि पत्रिका अपने लक्ष्य (त्रैमासिक) को प्राप्त कर सके एवं हमारे सहृदय पाठक लाभान्वित हो सकें ।

आदरणीय पाठकों से भी सादर अनुरोध है कि पत्रिका के संबंध में अपने विचार, सुझाव एवं मार्ग दर्शन हमें बेझिझक सूचित करें । इसके अलावे इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी एवं रोचक बनाने में अपनी रचनाओं से इसे सुशोभित करने हेतु महती कृपा करने का कष्ट करें । हम उनकी सहयोगपूर्ण सहभागिता के लिए अनुगृहित रहेंगे ।

अंत में हिंदी के प्रेमी एवं अत्यन्त जानकार संरक्षक माननीय महालेखाकार श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल तथा परामर्शदातृ समिति, सम्पादक मण्डल के सदस्यों एवं समस्त रचनाकारों के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिनके अपार स्नेह से यह पत्रिका पहले से ज्यादा अलंकृत रूप में प्रकाशित हो सका । पत्रिका के सुन्दर चित्रांकन एवं सफल मुद्रण के लिए सामान्य अनुभाग की भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता है, उन्हें 'चेतना परिवार' की ओर से कोटि-कोटि धन्यवाद । यह मेरे सेवा काल का प्रथम संपादकीय कार्य है, इसलिए भूल के लिए क्षमा याचना करते हुए सभी पाठकों और रचनाकारों को सहृदय बधाई ।

जय हिन्द, जय हिंदी ।



निरंजन प्रसाद
संपादक

“उठो जागो और तब तक नहीं रुको जब तक तुम्हें लक्ष्य की प्राप्ति न हो ।”

— स्वामी विवेकानंद —

कार्यालय, महालेखाकार (ले० व ह०), बिहार, पटना में हिंदी गतिविधियाँ-2011-12

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा सरकारी काम काज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है जिसमें हिंदी के प्रयोग के लक्ष्य निर्धारित किये जाते हैं तथा इन्हीं लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु विभिन्न कार्यालयों से अपेक्षा की जाती है। इस वर्ष महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना के कार्यालय ने अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने में जो प्रगति की है, उसका विवरण निम्नलिखित है :-

1. राजभाषा अधिनियम 3(3) का अनुपालन-

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत कुल 1757 दस्तावेज जारी किये गये, जिनमें हिंदी में 1752 तथा अंग्रेजी में 05 थे।

2 हिंदी पत्राचार :

वर्ष 2011-12 के दौरान इस कार्यालय में हिंदी में प्राप्त कुल पत्रों की संख्या 1,55,683 थी, जिनमें से 1,08,213 के उत्तर हिंदी में भेजे गये। शेष पत्रों के उत्तर अपेक्षित नहीं थे। कार्यालय द्वारा भेजे गए कुल पत्रों की संख्या 109369 थी। कुल भेजे गये पत्रों में से हिंदी पत्रों की प्रतिशतता 99.03 थी।

3 राजभाषा कार्यान्वयन समिति

उक्त वर्ष में रा०भा०का०स० की नियमित तिमाही बैठकें सम्पन्न हुई। नियमतः वर्ष के दौरान 4 बैठकें आयोजित की गई, जिनमें राजभाषा के कार्यक्रम एवं नीतियों के क्रियान्वयन पर विचार-विमर्श कर अधिकांश निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति की गई।

4 हिंदी कार्यशाला:

इस वर्ष इस कार्यालय में 8 हिंदी कार्यशालाएँ चलाई गईं जिनमें कार्यालय के 49 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

5 हिंदी पुरस्कार योजना:

वर्ष 2011 में इस कार्यालय के 05 अधिकारियों / कर्मचारियों को हिंदी पुरस्कार योजना के अन्तर्गत मूल टिप्पण एवं आलेखन के लिए हिंदी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार 'हिंदी दिवस' के पावन अवसर पर प्रदान किया गया।

6 हिंदी पखवारा समारोह का आयोजन

इस कार्यालय में वर्ष 2011 के दौरान 01 सितम्बर, 2011 से 14 सितम्बर 2011 तक हिंदी पखवारा समारोह का वृहत आयोजन किया गया। पखवारा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ यथा-हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, संक्षेपण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता तथा कम्प्यूटर पर हिंदी टंकण प्रतियोगिता इत्यादि आयोजित की गयी। विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को 'हिंदी दिवस' के उपलक्ष्य में पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

7 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति:

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में भाग लेने हेतु जब भी आमंत्रित किया गया, इस कार्यालय ने भाग लेकर राजभाषा कार्यक्रम एवं नीतियों के कार्यान्वयन की समीक्षा में अपने विचार व्यक्त किये। इस कार्यालय ने राजभाषा में वार्षिक कार्यक्रम के अधिकांश लक्ष्यों की पूर्ति की सूचना समिति को दी।

8 हिंदी शिक्षण योजना:

इस कार्यालय में अधिकारियों/कर्मचारियों के राजभाषा हिंदी के ज्ञान की स्थिति बहुत अच्छी है। यहाँ 99 अधिकारी एवं 358 कर्मचारी हैं जिन्हें हिंदी

का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है । यहाँ सभी हिंदी में ही कार्यालय का कामकाज करते हैं । इस कार्यालय में 04 आशुलिपिक हैं जो हिंदी में प्रशिक्षित हैं । यहाँ 15 टंकण हैं जिनमें सभी हिंदी में प्रशिक्षित हैं ।

9. हिंदी पुस्तकों की खरीद:

इस कार्यालय में 2011-12 के दौरान पुस्तकों के क्रय पर कुल 24,535 रु व्यय किया गया जिसमें से हिंदी पुस्तकों की खरीद पर 20,000 रुपये व्यय किया गया ।

10. हिंदी टिप्पण:

इस कार्यालय में लगभग शत प्रतिशत हिंदी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन किया जाता है । वर्ष 2011-12 के दौरान इस कार्यालय में कुल 56,058 फाइलें, खोली गई जिनमें 55,580 फाइलों में हिंदी में टिप्पणियाँ लिखी गई ।

इस प्रकार इस कार्यालय ने कुछ लक्ष्यों को छोड़कर वार्षिक कार्यक्रम के अधिनियम लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है । अतः राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों में वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए समीक्षा की जाती रही है । आशा है, आगामी वर्षों में शत-प्रतिशत लक्ष्यों की पूर्ति की जा सकें ।

“यौवन काल जीवन का स्वर्ग है । यदि समस्त संसार की संपदा एक ओर रख दी जाए और यौवन दूसरी ओर तो ऐसा कौन प्राणी है, जो उस विपुल धनराशि को आँख उठाकर भी देखे ।”

— प्रेमचंद —

पुरस्कार वितरण (वर्ष-2011)

हिंदी पखवारा वर्ष 2011 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अति उत्साह से भाग लिया गया, जिसमें सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया गया, जिनका विवरण निम्न प्रकार है :-

क्रम संख्या	कार्यक्रम	श्रेणी	प्रतिभागियों का नाम	पदनाम
1	हिंदी क्विज	प्रथम द्वितीय तृतीय	राकेश कुमार न०-3, अरुण कुमार न०-1, कुंज बिहारी झा,	(स०ले०प०अधि०) (स०ले०प०अधि०) (व० लेखाकार)
2	हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन	प्रथम द्वितीय तृतीय	यतीश चन्द्र वर्मा, रामबली सिंह, सुरेन्द्र लाल दास,	(स०ले०अधि०) (स०ले०अधि०) (स०ले०अधि०)
3	हिंदी टंकण (कम्प्यूटर पर)	प्रथम द्वितीय तृतीय	राजीव कुमार, न०-3, प्रमोद कुमार, राजू कुमार,	(स०ले०प०अधि०) (निजी स०/व० उप म०ले०) (डी०ई०ओ०)
4	हिंदी निबंध प्रतियोगिता	प्रथम द्वितीय तृतीय	राजू कुमार सिंह, रंजीत कुमार कर्ण, पंकज कुमार शर्मा	(स०ले०प०अधि०) (ले०प०/एल०ए०डी०) (स०ले०प०अधि०)

उस व्यक्ति के लिए कुछ भी असंभव नहीं, जो संकल्प कर सकता है और फिर उस पर आचरण कर सकता है, सफलता का यही नियम है।

- मोराबी -

दीप जले



राजेन्द्र कुमार
पर्यवेक्षक

जगमग - जगमग दीप जले,
मनुआँ जागल क्यूँ तू सोवत है।
सुबह-शाम दिन रात रे मनुआँ,
हरि-गुण क्यूँ नहीं धारत है॥

जगमग-जगमग

डोर भाग्य की कर्म से बंधे,
क्यूँ कर्म योग नहीं धारत है।
ईश्वर मंदिर में बैठा तू
ईश गुण क्यूँ नहीं गावत है॥

जगमग-जगमग

करके चिन्ता फल की तू बंदे,
कर्म से क्यूँ मुख मोड़त है।
लगन लगाले कर्म में तू बंदे,
तप-कर्म फल ईश देवत हैं॥

जगमग-जगमग

सत्य ही सदगुण सत्य ही ईश्वर,
सत्य धर्म क्यूँ नहीं धारत है।
सत्य की डोर छोड़ तू बंदे,
माया बीच क्यूँ भटकत है॥

जगमग-जगमग

करके स्वाध्याय तू गुरु के बंदे,
झाड़ू मंदिर क्यूँ न लगावत है।
डोर पकड़ ले गुरु के बंदे,
जीवन पावन हो जावत है॥

जगमग-जगमग

ईश्वर रूप में होकर भी तू,
कडुवे वचन क्यूँ बोलत है,
करले प्रेम तू हर मानव से,
जन्म सफल हो जावत है॥

जगमग-जगमग

+++++

“ऐसा कोई भी व्यक्ति संसार में नहीं है, जिसके पास एक बार भाग्योदय का अवसर न आता हो। परन्तु जब वह देखता है कि वह व्यक्ति उसका स्वागत करने के लिए तैयार नहीं है, तो वह उल्टे पैरों लौट जाता है।”

- कार्डिनल -

गाँधी



राजेन्द्र कुमार
पर्यवेक्षक

गाँधी, तुम हो लाठी धरे,
तन पर वस्त्र है खादी का,
पैरों में चप्पल धरे हुए,
अपने आगे सारी दुनियाँ को,
लम्बा कद है हाथें लम्बी,
चलते हो तो लगता है,
फुर्सत की घड़ियों में बाबा,
सूत कातकर कपड़ा बुनते,
परीक्षा में तुम टीचर की,
नकल करने की प्रथा को,
सत्य-अहिंसा का शस्त्र उठा,
अंग्रेजों का सिर नीचे झुका,
दुनियाँ तेरे पीछे भागती,
जैसे कोई दौड़ लगा हो,
ट्रेन की घटना दिल में बांधे,
दृढ़ संकल्प की दीक्षा ले,
आजाद हुआ कागज पर देश,
अंग्रेजों के नियम कानून,
ऐसी आजादी किस काम की,
अपना कानून नहीं होता,
आजादी केवल उन्हें मिली,
आजादी की गुलामी से,
चले गाँधी बिड़ला मंदिर को,
गोली खाकर गोइसे की,
आई विपत्ति जब-जब देश पर,
संग सभी योगी संतों के,

गीता हाथ में रखते हो।
स्वदेशी का मान बढ़ाते हो।
लम्बी-लम्बी पग धरते हो।
शीश नवाते पाते हो।
धोती उजली चश्मा गोल।
पा लोगे तुम धरती गोल।
चरखा खूब चलाते हो।
खादी का पाठ पढ़ाते हो।
बातों में न कभी आये है।
कक्षा से दूर भगाये है।
शान्ति का पाठ पढ़ाये हो।
भारत की शान बढ़ाये हो।
तुम रहते आगे-आगे।
दुश्मन फिरते भागे - भागे।
आजादी का मन बनाया है।
भारत आजाद कराया है।
भीतर से वह गुलाम रहा।
देश पर अब तक लागू रहा।
जहाँ गरीबों पर डंडा चलता हो।
पर मुखौटे बदलते रहते हों।
जो बलशाली होते हैं।
निर्बल रूबरू होते हैं।
राम-नाम जपते हुए।
गिरे, "हे राम!" वे कहते हुए।
तब-तब तुम अवतार लिए,
ले "हे राम-नाम" उड़ान लिए।

+++++

चींटी से अच्छा उपदेश कोई नहीं दे सकता और वह मौन रहती है।
- फ्रेंकलिन -

आह

मुक्ता बनर्जी
डाटा ऑपरेटर

“आधुनिकता की दौड़ में दरकते एवं समाप्त होते पारिवारिक रिश्तों की मर्मस्पर्शी कहानी है ‘आह’। लेखिका की कथा प्रवाह सशक्त है और पाठक मुख्य पात्र की करुणा में अपना दुःख ढूँढ़ लेता है। त्याग और स्वार्थ की कारुणिक कहानी के लिए लेखिका को धन्यवाद।”

— संपादक;

अपने यौवन को तिलांजली देकर एक ही साड़ी धारण किये निजी स्कूल में नौकरी करके घर-घर ट्यूशन पढ़ाने का काम करके कनक दीदी पाँच भाई-बहनों का भरण-पोषण करती थी। सभी को खिलाने के बाद बचा-खुचा खुद खा लेती थी। अपने वर्तमान जीवन से संतुष्ट होकर छोटे भाई-बहनों की परवरिश कर रही थी।

माँ गर्व से कहती बेटी हो तो कनक जैसी! बाप कहता, कनक तो मेरी बेटी नहीं बेटा है, ऐसी औलाद ईश्वर सभी को दे। पड़ोसी कहते कितनी हिम्मती, कितनी मेहनती, कितनी साहसी और सहनशील है। यह लड़की जहाँ भी जायेगी, राज करेगी।

वक्त बदला, अब भाई-बहन बड़े हो गये थे। भाइयों के दोस्तों ने कहना शुरू कर दिया कि तुम्हारी दीदी शादी क्यों नहीं करती? भाइयों ने झूठ का सहारा लिया। पता नहीं, कैसा राजकुमार चाहती है? कोई लड़का पसंद ही नहीं आता। सच नहीं कह पाता कि वक्त ने दीदी को शादी नहीं करने दिया।

समय ने माँ-बाप का भी सोच बदल दिया। अब तीनों भाई कमाने लगे थे। माँ-बाप भी चाहते थे समाज के सामने अपनी शेखी बघारना, इसलिए सभी ने तय किया कि अब कनक की शादी कर ही देनी चाहिए।

अपने संबंधी का ही एक विधुर लड़का से कनक की शादी हो गई। वह भी एक आह भरकर चली गई कि अब मेरी जरूरत नहीं है इस परिवार को। दो चार साल उसकी गृहस्थी जैसे-तैसे चली फिर किस्मत ने पलटा खाया। कनक दो साल का बेटा गोद में लेकर विधवा हो गई।

अब तक भाइयों का समाज में अच्छा खासा नाम, यश हो चुका था। सभी अपने वर्तमान जीवन राजी खुशी से जी रहे थे। पति के देहान्त के बाद कनक के पास कोई सहारा नहीं बचा। वह थके हारे, मन में बहुत सारी आशा लेकर मायके आ गई। सोचा, मेरे अपने भाई-बहन तो हैं ही, बाकी जिन्दगी उनके पास रहकर गुजार लूँगी।

पर शायद समय बहुत बलवान होता है। दरवाजे पर उसे देखते ही भाई तथा बहुएँ की भौहें तन सी गई। लो आ गई करमजली अब हमारे कलेजे पर मूँग दलने। यहाँ आने से पहले कहीं डूब क्यों नहीं मरी। कैसे गुजारोगी बाकी जिन्दगी अकेले, कौन लेगा तुम्हारा और इस लड़के का भार? कनक को मानो साँप सूँघ गया। वह उल्टे पाँव लौट चली। कभी मन में आया गंगा में डूब मरूँ, या रेल से कट जाऊँ, फिर गोद में पड़े बच्चे को देखकर माँ की ममता जाग पड़ी। नहीं-नहीं तुझे पालूँगी मेरे लाल और वह फफक कर रो पड़ी। वह फिर से हिम्मत जुटाकर जैसे-तैसे अपने बेटा को दस वर्ष का कर पायी, पर शायद ईश्वर की परीक्षा अभी भी खत्म नहीं हुई थी, अचानक दो दिनों के बुखार से उसे लकवा मार दिया।

पड़ोसी की मदद से उसे एक रेड कॉस सोसाइटी से साइकिल दिलवा दिया गया। बेटा उस पर कनक दीदी को बैठाकर सवेरे भीख माँगने का काम करता, जहाँ जो भी मिलता खा लेता और फिर वही फुटपाथ पर सो जाता।

कुछ परिचित सज्जन जिनसे कनक दीदी का यह हाल सहन नहीं हुआ वे उनके भाइयों के पास गये और कहने लगे, तुम्हें शर्म नहीं आती जिसने तुम्हें माँ बनकर परवरिश की है वह आज सड़क की भिखारिन बनी हुई है। शर्म करो, अपनी करनी पर। क्या तुम लोगों की सारी गैरत मर चुकी है? क्यों नहीं रखते हो

अपने पास ? क्या तुम्हारे इतने बड़े घर में किसी एक कोने में उसका गुजारा नहीं होगा ? लोगों के सामने तो वे भलेमानुष की तरह अपनी गलती स्वीकार कर उनलोगों से माफी माँगी और कहा, हमसे भूल हो गई। कल ही दीदी को हमलोग अपने घर ले आयेंगे।

सवेरे तीनों भाई कनक दीदी के पास गये। उनलोगों को देखते ही मानो वह सारा गिला शिकवा भूल गई और कहने लगी, हे ईश्वर ! तुम्हें लाख-लाख धन्यवाद। आखिर मेरे भाई मुझे लेने आ ही गये। उसके मन में झंकार सी बजने लगी। वह अपने बेटा से बोली, बेटा ! मामा के पैर छुओ।

जैसे ही भांजा पैर छूने के लिए झुका, वे थोड़ा हटकर बोले हम तुम्हें लेने नहीं आये हैं, बल्कि यह कहने आये हैं कि अगर तुम्हें भीख माँगनी हो तो यह शहर छोड़कर कहीं और चली जाओ जहाँ तुम्हारी कोई पहचान नहीं हो। तुम्हारा इस तरह सड़क पर भीख माँगना हमारे इज्जत और मान सम्मान को ठेस पहुँचाता है।

अपलक नजरों से कनक सारी बातें सुनने के बाद बोली, हे ईश्वर इन्हें माफ करना, ये नादान हैं। फिर बोली, बेटा गाड़ी आगे बढ़ाओ। फिर कनक दीदी कहाँ गई किसी को नहीं पता, किसी ने फिर उसे नहीं देखा।

+++++

“जिस क्षण हमें अपनी भूल मालूम हो, उसी क्षण हमारा पुनर्जन्म हुआ मानो। उसे अपना नवीन बचपन, अपने जीवन का नव प्रभात समझो।”
- विनोबा भावे -

मुझे चाँद चाहिए



संगीता रंजन,
पत्नी-श्री निरंजन प्रसाद,
(स०ले०अधि०)

(सच्चे प्रेम का अन्त प्रायः दुखान्त ही होता है, खासकर एक तरफा प्यार का। इस पृष्ठभूमि में लिखी गई यह कहानी पाठकों को अंत तक बाँधे रखने में कितनी सक्षम है, इसका निर्णय पाठकगण ही कर सकते हैं।

सलोनी छत पर खड़ी हो चाँद को निहार रही है। चाँद भी अपने निर्मल हृदय से चाँदनी बिखेर रहा है। सलोनी उस चाँद के तरफ यूँ देखती है, मानो उस चाँद में उसे किसी का चेहरा नजर आ रहा हो। उसकी आँखों में नजर आ चाँद उसे स्मृतियों में कहीं बरसों पीछे लिए जाता है।

‘कुछ हसीन लम्हें गुलजार हो गये,

हम मिटे जरूर मगर प्यार हो गये।’

बारात दरवाजे पर आकर लगी थी। उस बारात के दरवाजे पर एक लड़का काफी देर से खड़ा उस लड़की को निहार रहा था। वह उनसे बातें करने की बात जोह रहा था। आखिर उसे मौका मिल गया तो उसने पूछ लिया।

“मैं आदित्य!” आपका क्या नाम है? लड़की सकपकाई मगर वह जानते हुए कि वह उसकी सहेली स्नेहा के भाई का दोस्त आदित्य है - “सलोनी।”

सलोनी अपनी सहेली की शादी में आई है जहाँ उसकी मुलाकात आदित्य से होती है। सलोनी की आदित्य से थोड़ी देर बात होती है। सलोनी समय के इस

छोटे लम्हे को जल्द ही भूल जाती है, पर आदित्य सलोनी से मन ही मन बेहद प्यार करने लगता है और उस प्रेम की धारा में डूब जाता है।

कुछ समय पश्चात आदित्य की मुलाकात फिर वही सलोनी से होती है। वह अपने मन की बात बता भी नहीं पाता है कि पता चलता है कि सलोनी की शादी कहीं और तय हो गई है और सलोनी भी इस रिश्ते से काफी खुश है। उसे इस बात का अहसास तक नहीं होता है कि आदित्य उससे बेहद प्यार करता है। वक्त के साथ दोनों के रास्ते अलग-अलग हो जाते हैं। सलोनी की शादी कहीं और हो जाती है और आदित्य रह जाता है अपनी दुनिया में तन्हा, अकेला।

इस बात को वर्षों बीत जाते हैं। सलोनी बेहद प्यार करने वाले पति सुशांत और अपनी दो बेटियाँ नूपुर और पायल के साथ बहुत खुश है। एक दिन अचानक आदित्य, जो सालों से सलोनी को आत्मा की गहराइयों से प्यार करता था, को सलोनी की सहेली स्नेहा की डायरी से सलोनी का फोन नम्बर मिलता है और उसका मन सलोनी से बात करने को बेचैन हो उठता है। फिर एक दिन अचानक सलोनी के पास आदित्य का फोन आता है - “हेलो! आप कौन? पहचाना मुझे, मैं आदित्य।” सलोनी पहचान कर काफी खुश होकर उससे बात करती है - तुम आदित्य! कैसे हो? इतने साल बाद? तुम्हें नम्बर कहाँ से मिला? तुम्हारी पत्नी और बच्चे कैसे हैं? एक पर एक सवाल की बौछार! और आदित्य! वह सलोनी की किसी बात का जवाब नहीं दे पाता। बस, निःशब्द उसकी मीठी आवाज को सुनता चला गया और सलोनी इन सब बातों से अनजान - कुछ बोलो आदित्य, तुम चुप क्यों हो?

मैंने आज तक शादी नहीं की, क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता था। याद है वो छोटा सा लम्हा, जब मैंने पहली बार तुमसे बातें की थी। मैं उस समय से तुमसे प्यार करता हूँ। मैं आया था तुम्हारे पास, लेकिन तुम इन बातों से अनजान अपनी दुनिया में बहुत खुश थी।

मैं जानता था कि तुम मुझसे प्यार नहीं करती। मैं जानता था कि तुम मुझसे नफरत भी नहीं करती, पर अपनों का दर्द दुश्मनों से भी बड़ा होता है। मैं

आज भी तुमसे बहुत-बहुत प्यार करता हूँ।

सलोनी अवाक! हैरान, परेशान और आदित्य अपनी धुन में बोलता जा रहा था। मेरे पास आज भी तुम्हारे लिए सब कुछ है - हंसी-खुशी, आँसू-मुस्कान सब कुछ बोलो! कहाँ से शुरू करूँ।

सलोनी का दिल आदित्य के प्रति सहानुभूति से भर उठता है, लेकिन वह तो बिल्कुल अन्जान थी। वह आदित्य को समझाती है - “देखो आदित्य, समय पीछे लौटकर नहीं आता। हो सकता है कि इस जन्म में हम दोनों का साथ लिखा नहीं हो और हाँ, कुछ अगले जन्म के लिए छोड़ देना चाहिये और अब मैं तुम्हारी एक बहुत अच्छी दोस्त हूँ, तुम जब चाहो फोन करना।

सलोनी के बहुत समझाने के बाद वह थोड़ा संयम तो होता है पर सलोनी से बात करने से खुद को रोक नहीं पाता। अब आदित्य को फोन कभी कभार आता। सलोनी उससे दो चार औपचारिक बातें करती फिर वापस अपनी दुनियाँ में व्यस्त हो जाती। अब तो सलोनी ना तो उसकी जिन्दगी में वापस आ सकती थी ना ही उससे प्यार से बातें कर सकती थी। आदित्य खुद को बेहद लाचार और असहाय महसूस करता। इतने सालों से न तो उसने सलोनी को देखा था और ना ही उससे बातें की थी, लेकिन अब सलोनी की आवाज सुनने के बाद वह बेचैन रहने लगता है और धीरे-धीरे निराशा के अंधकार में डूबता चला जाता है और इसी निराशा में वह एक दिन खुद को रोक नहीं पाता और आत्महत्या कर लेता है।

इधर काफी दिनों तक आदित्य का फोन नहीं आने पर सलोनी को आदित्य का ख्याल आता है - “काफी दिनों से आदित्य का फोन क्यों नहीं आया? अचानक एक दिन फोन की घंटी घनघना उठती है। मैं आदित्य का दोस्त प्रशान्त बोल रहा हूँ - “आदित्य अब इस दुनिया में नहीं रहा।” क्या! सलोनी फोन पर ही कांप उठती है। क्या हुआ था आदित्य को?

इधर प्रशान्त बोलता जा रहा था - आदित्य मेरा बहुत अच्छा दोस्त था। इतने सालों से वह आपको बेहद प्यार करता आ रहा था। आपसे बात करने के बाद वह काफी दिनों से गुमसुम रहने लगा था और अचानक उसने नींद की ढेर सारी

गोलियाँ खा ली। उसने आपके लिए कुछ रखा है - कृपया, आप अपना पता दे दें।

कुछ दिनों के बाद आदित्य के हाथ की बनी पेंटिंग और डायरी सलोनी के पास आती है। पेंटिंग देखकर सलोनी बरसों पहले लौट जाती है - बारात की भीड़-भाड़ के बीच एक प्यारी सी लड़की और दूर कोने से उसे प्यार से निहारता एक लड़का। सलोनी की आँखें डबडबा जाती हैं। कांपती हाथों से डायरी का पहला पन्ना खोलती है - मैं तो तुम्हारे प्यार में निःशब्द जीता रहा। काश! मैं अपने दिल की बात बता पाता, पर इन बातों का कोई फायदा नहीं। तुमने कहा था - कुछ अगले जन्म के लिए भी छोड़ देना चाहिए। मैंने इस जन्म से इस मृत्यु से तुम्हारा इन्तजार शुरू कर दिया है।

इस नभ में इस जल में इस वायु में इस अग्नि में इस पृथ्वी पर तुम्हारे साथ-साथ, आस-पास हमेशा तुम्हारा इन्तजार करूँगा।

सलोनी की आँखों से आँसू बह निकलते हैं। सलोनी डायरी के पन्नों को आगे पलटती है। कभी आँखें खोल देखोगी तुम - आकाश की छाया में मैं तुम्हें ताकता मिल जाऊँगा। प्यार एक अहसास है, जो समय के साथ बढ़ता जाता है, कभी कम नहीं होता। शायद इसलिए आज तक दुनियाँ सच्चे प्यार को समझ नहीं पाई। इस जिन्दगी में जहाँ आँसुओं की कीमत मतलब से कुछ ज्यादा नहीं, हम तुम्हें अपनी जिन्दगी समर्पित करते हैं - तुम जीओ, हम मरते हैं।

सलोनी विस्मृतियों से बाहर आती है। उसकी नजरें चाँद पर जाती हैं। चाँद अब भी उसी निर्मलता से उसे निहार रहा है। उसकी चाँदनी अब भी उसे छू रही है। हवाएँ उसकी लट को उस चाँदनी में छूकर निकल जाती हैं। सलोनी चाँद को निहार रही है। सलोनी को उस चाँद में आदित्य का चेहरा दिखाई देता है। ऐसा लगता है जैसे अपनी बाँहें पसारे सलोनी को अपने में बुला रहा है। तभी सलोनी के पति उसे ढूँढ़ते हुए छत पर आ जाते हैं। खुद को संयत करती सलोनी साथ आ जाती है।

सलोनी अपने पति के साथ है। पति उसे प्यार करना चाहता है, पर वह साथ नहीं देती है। वह उससे सात जन्मों के बंधन की दुहाई देता हर जन्म में उसी को

पत्नी के रूप में पाने की कामना करता है तो सलोनी विह्वल हो उठती है।

उसे दूर कहीं ख्यालों में किसी अनन्त से इंतजार करते आदित्य की आत्मा की पुकार सुनाई देती है - “मैं तुम्हारा जन्म-जन्म तक इंतजार करूँगा।” पति की बाँहों के आगोश में लिपटी सलोनी के कानों की धमनियों में वही आवाज अब भी आ रही है, कहीं अनन्त से - “सलोनी तुम कहाँ हो ? तुम कहाँ हो ?”

+++++

“कोयल का सौन्दर्य उसके स्वर में है, स्त्री का सौन्दर्य उसके पतिव्रत-धर्म में है, कुरुपों का सौन्दर्य विद्या में है और तपस्वियों का सौन्दर्य उसकी क्षमा में।”
- चाणक्य नीति -

दीपावली

यतीश चन्द वर्मा
सहायक लेखा अधिकारी

दूर गगन में उड़ते बादल
कुछ उजले कुछ नीले से,
छू लेते हैं मन को मेरे
कुछ हैं रंग सुनहले से।

बोला उजला बादल मुझसे
आज दीवाली है तुम उदास क्यों ?
सजा है जगमग दीप हर जगह
फिर भी हो तुम निराश क्यों ?

मैं बोला,
दीप जले हैं महलों में,
है खुशियों की धूम वहाँ,
छूट रही है आतिशबाजी
झूम रहा है सारा जहाँ।

पर उनकी भी तो सोचो
जो रहते झोपड़ियों में,
आज कमाते आज ही खाते
कभी गुजरता फाँके में।

वो कैसे दीप जलाएँगे
कैसे दीपावली मनाएँगे ?
कैसे करेंगे आतिशबाजी
कैसे खुशियाँ मनाएँगे ?

बादल बोला, तारे दीप जलाएँगे,
बादल गरजे तो होगी आतिशबाजी,
टिम-टिम तारे होंगी फूलझड़ियाँ
खुशियों की मिठाइयाँ खाएँगे।

उनको न घूसखोरी का भय,
न इन्कम टैक्स चोरी का भय,
न होगी तिजोरी की चिंता,
प्रेम गीत वो गाएँगे।

तारों की लरियों से
घर-आँगन दीप जलाएँगे।

+++++

“जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। जहाँ इनकी पूजा नहीं होती वहाँ सब क्रियाएँ निष्फल होती है।”
- मनुस्मृति -

आँखों का नूर

शिव शंकर तिवारी, शाहपुरी
वरिष्ठ लेखाकार

अशक आँखों का,
हर रोज पिया करता हूँ।
जिन्दगी यूँ ही, तेरे बिन जिया करता हूँ।

तेरे ही नूर का है इन्तजार, ऐ दिलवर!
तुझको हर पल, मैं याद किया करता हूँ।
अशक आँखों का,
हर रोज पिया करता हूँ।
जिन्दगी यूँ ही, तेरे बिन जिया करता हूँ।

मेरे महबूब,
तेरे दीदार की चाहत,
मन में, नित्य किया करता हूँ।
अशक आँखों का,
हर रोज पिया करता हूँ।
जिन्दगी यूँ ही, तेरे बिन जिया करता हूँ।

मेरे हर रोम में, हर सांस में,
तेरी खुशबू, दौड़ती रहे हरदम,
यही दुआ किया करता हूँ।
अशक आँखों का,
हर रोज पिया करता हूँ।
जिन्दगी यूँ ही, तेरे बिन जिया करता हूँ।

‘तिवारी ‘शाहपुरी’ पर, रहमोकरम है तेरा।
ज्योति तेरे प्यार की, जगमग जलाया करता हूँ।
अशक आँखों का,
हर रोज पिया करता हूँ।
जिन्दगी यूँ ही, तेरे बिन जिया करता हूँ।

+++++

“जिसकी पत्नी अनुकूल है, उसका स्वर्ग यही है और जिसकी पत्नी प्रतिकूल है, उसका नरक यही है।”
- दक्षस्मृति -

जे०एन०यू० + जे०एल०एन०यू० = तलाक

श्रीराम पाण्डेय

सहायक लेखा अधिकारी

आदरणीय पाठकवृंद सोच रहे होंगे (जो मुझे जानते हैं) कि गणित से दूर-दूर तक का संबंध नहीं रखने वाला यह मूढ़ आखिर जोड़-घटाव करने वाला शीर्षक कहाँ से लेकर आ गया (हालाँकि मुझे मालूम है कि गणित ही नहीं, अपितु साहित्य के क्षेत्र में भी मेरी स्थिति कमोवेश मूढ़ वाली ही है)।

बंधुवर, साहित्य की विद्या का ज्ञाता नहीं होने के बावजूद मैं इतना जानता हूँ कि किसी साहित्यिक रचना में गणितीय चिन्हों का कोई स्थान नहीं। आप सब जब मेरी विपदा, मेरी त्रासदी से रुबरु होंगे तो पता चलेगा कि शीर्षक में प्रयुक्त जोड़-घटाव गणितीय नहीं, वरन संबंधों के बिखराव के पीड़क संकेत हैं।

बात तब की है, जब मेरी बेटी का जन्म हुआ था। हालाँकि उस समय मेरी अर्द्धांगिनी को मेरे जितना खुशी तो नहीं हुई थी, परन्तु शनैः-शनैः बेटी के प्रति उनका वात्सल्य मुझसे भी ज्यादा बढ़ता गया। वह जब रोती या कुछ कहना चाहती तो हम दोनों अपने-अपने ज्योतिष ज्ञान का भरपूर उपयोग करते हुए तरह-तरह के अनुमान लगाने लगते। पुत्री के मुँह से कोई शब्द निकला नहीं कि पत्नी जी को लगने लगता कि वह माँ कह रही है। मैं विरोध करता, “माँ नहीं पापा कह रही है।”

“पापा तो कहीं से भी नहीं लगा।”

“पापा नही तो पा कह रही होगी। अभी से कितनी मॉड हो गई है मेरी बेटी।” पत्नी जी जल भुनकर राख हो जाती।

एक दिन जब मेरी बेटी कुछ कह रही थी तो देवीजी को लगा कि वह ‘जे०एन०यू०’ कह रही है। मैं जब कार्यालय से घर लौटा तब वह दरवाजे पर मेरी राह देख रही थी। कुछ देर के लिए ही सही, उस दिन पहली बार मुझे अपने पति होने पर गर्व की अनुभूति हुई। यद्यपि यह अनुभूति बालू की भीत ही साबित हुई,

क्योंकि श्रीमती जी ग्लास में फ़िज का शीतल जल लिये नहीं, अपितु यह बताने के लिए खड़ी थी कि बेटी 'जे०एन०यू०' बोली है। न जाने मुझे क्या हो गया कि तपाक से पूछ दिया, यह 'जे०एन०यू०' क्या है? तपाक से उन्होंने भी अपनी बौद्धिकता का परिचय दिया, अजी 'जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी'। देखियेगा, बड़ी होकर 'जे०एन०यू०' में पढ़ेगी अपनी लाइली।

पुत्री 'जे०एन०यू०' बोली थी या कुछ और, मुझे तो इस पचड़े में पड़ना ही नहीं है। वामांगी अपनी ज्ञान पटुता का परिचय देकर मेरी दायांगी न बन बैठे, मैं अधिक सतर्क हो गया। “जवाहर लाल नेहरू का शॉर्ट नाम क्या होगा, जरा बताओ तो?”

“अजी जे०एल०नेहरू।”

“तो फिर जे०एल०एन०यू० को जे०एन०यू० कैसे कह रही हो?”

श्रीमतीजी ने मुझे इस तरह देखा जैसे दुनिया का सबसे बड़ा मूर्ख मैं ही हूँ (मेरा ज्ञान चक्षु बता रहा है कि पाठकवृंद भी वही समझ रहे होंगे, जो पत्नी समझ रही है। आखिर पुस्तक के पन्नों की तरह अपनी कलाई स्वयं खोल रहा हूँ।) लगातार टकटकी लगाकर देखने लगी वह। अपनी झेंप मिटाने के लिए अटकते हुए मैंने पुनः वही सवाल दुहरा दिया। अब चिढ़कर लगभग चिल्लाते हुए वह बोली, “गाल बजाकर जीतने की कला तो कोई आपसे सीखे।”

“तो क्या तुम्हें जीतने दूँ, जिसे जे०एल०एन०यू० और जे०एन०यू० में कोई फर्क नजर नहीं आता?”

“आपके सिवा दुनिया में कोई और नहीं होगा जो जे०एन०यू० नहीं जे०एल०एन०यू० कहता हो।”

“लगता है पूरी दुनिया में सबसे बड़ी विदुषी तुम्हीं हो। यूनिवर्सिटी का स्पेलिंग तक मालूम नहीं और चली है बात करने।”

“मेरा मुँह मत खुलवाइये। पड़ोसी का दो क्लास का बच्चा भी यदि कुछ पूछने आता है तो डिक्शनरी ढूँढने लगते हैं और अंग्रेजी का विद्वान बनने चले हैं।”

हम भारतीय परिवेश की यह सबसे बड़ी खूबी है कि हम कोई बात गलत ही क्यों न कह रहे हों, पत्नी यदि उसे काटे या हमारी विद्वता पर शक करे तो उसे कदापि सहन नहीं कर सकते। मैं पूरी तरह बौखलाते हुए चीखने लगा, “बनेगी ज्यादा, गोइठा चुनने वाली मेरी विद्वता पर शक कर रही है?”

फिर क्या नहीं हुआ हम दोनों के बीच। यदि पूरा वृत्तांत लिख दूँ तो व्यासजी की उस मार-काट वाली वृत्ति के सभी स्कंध मिलकर भी कम पड़ जायें। बस इतना समझ लीजिये कि तीन बार तलाक कहने से काम चल जाता तो उस दिन हमारा तलाक अवश्य ही हो गया होता। कुछ दिनों तक बहुत ही भयावह स्थिति बनी रही। बिना किसी भोज निमंत्रण के घर में चूल्हा निवारण होने लगा। अच्छी कद-काया एवं व्रत-उपवास के आदि होने के कारण श्रीमतीजी इस तरह का निवारण तो कई दिनों तक कर सकती थी परन्तु मुझे उसकी आदत नहीं थी। कभी बीमारी की हालत में भी अन्नपूर्णा देवी ने मुझे भूखा रखा हो, याद नहीं। एक-दो दिनों तक तो किसी तरह बर्दाश्त कर लिया, परन्तु क्षुधा व्याकुलता अब मेरे उपर हावी होने लगा। लगने लगा कि अब सब कुछ समाप्त हो जायेगा। जे०एल०एन०यू० और जे०एन०यू० यमराज रूप में दिखाई देने लगा। पर कैकेई महारानी कोप भवन में प्रस्तर बन पड़ी रही। लगता था कि रामायण और महाभारत की कथाएँ एक साथ घटित हो रही हैं।

अंततः मुझे ही झुकना पड़ा, चलो खा लो, तुम्हारी यह हालत मुझसे देखी नहीं जा रही है।” मुझे लगा कि इस बात पर अंदर-ही-अंदर आग और भभकेगी। पर वाह रे मेरी किस्मत! अनुमान के विपरीत वह जोर-जोर से हँसने लगी, “मेरी हालत नहीं देखी जा रही है या स्वयं भूख से बिलबिला रहे हैं।” फिर रोने लगी और बोली, गोइठा चुनने वाली की चिंता आप क्यों कर रहे हैं? मैं मर जाना चाहती हूँ ताकि आपको कोई विदुषी मिल सके।” मैं इस विवाद में बिल्कुल नहीं पड़ना चाहता था कि इतनी जल्दी बात कैसे बन गई? हाँ, बात बन गई है, यह तो समझ ही गया था। अब अपने उपर खीज भी होने लगी कि क्यों मैंने तिल को ताड़ बना दिया, वह भी झूठ-मूठ।

ठाकुर सोहाती करने लगा, “चलो छोड़ो भी। तुम तो जानती हो कि मैं

पागल टाइप का व्यक्ति हूँ। नहीं तो तेरी जैसी अन्नपूर्णा देवी को मैं गोइठा चुनने वाली कहता! बात करना तो कोई आपसे सीखे। परन्तु एक शर्त पर मैं आपको क्षमा कर सकती हूँ, मेरी कसम खाकर बताइये कि जे०एन०यू० सही है या जे०एल०एन०यू० ?”

एक तो उदराग्नि का प्रकोप और उपर से प्यारी अन्नपूर्णा की कसम, मैं झूठ कहता तो कैसे कहता।

+++++

“वही भार्या उपयुक्त है, जो पवित्र और कार्यकुशल है। वही भार्या अच्छी है, जो पतिव्रता है। वही भार्या शुभ है, जो पति से प्रेम करने वाली है और वही भार्या सफल है, जो सदा सत्य बोलती है।”

- चाणक्य नीति -

थका-हारा बेचारा



अश्विन कुमार, युपुत्र
श्री प्रेम निवास मिश्रा,
(स०ले०अ०)

जब किसी को विलासपुर का मकान न०-१३ पसंद न आया, तब शर्माजी ने नए-नए किरायेदारों को फँसाने का प्रोग्राम बनाया।

घर पकड़ा, जाकर एक सीधे-साधे बूढ़े क्लर्क को, जो दफ्तर में काम के समय में खरटि भरता था।

क्लर्क बोला - “आपके मकान में खास क्या है?”

बोले शर्माजी - “दारु-खाना और जुए का अड्डा, बस यही पास है।”

नल में पानी आयेगा नहीं, इसकी कोई गारंटी नहीं, क्योंकि यहाँ पानी भी सरकारी है, मेरे बाप की कोई टंकी नहीं।

ज्यादा पंखे मत चलाना, हो जाएगी बिजली गुल, क्योंकि मीटर में कागज घुसेड़कर आती है बिजली फुल।

खिड़की में शीशे नहीं है, बड़ी अच्छी बात है, दिखेंगे नजारे, आएगी हवा, चाहे दिन हो या रात।

इसी फ्लैट में, उपर का किराएदार मेरा साला है, दाई ओर कूड़े का मैदान और बहता हुआ नाला है।

किराया लूंगा महीने की पहली तारीख को दो हजार, मुझे किराएदारों की फिक्र नहीं, लगी है लम्बी कतार।”

शर्माजी से प्रभावित होकर बूढ़े ने भर दिया एडवांस एक हजार, आखिर नजदीक जो थे रेलवे स्टेशन, पुलिस थाना और चोर बाजार।

अगले दिन अपनी इकलौती पत्नी को लेकर बूढ़ा घर में आया, टूटी-फूटी दीवारों की स्थिति देखकर पत्नी ने उसे खूब गलियाया।

बोली पत्नी - “दो हजार में भी यह मकान काफी महँगा पड़ेगा, मैं तो चली जाऊँगी अपने मायके, तू ही बैठकर यहाँ सड़ेगा।”

हर रोज दफ्तर जाने से पहले नाश्ते में मिलते थे बीवी के ताने, परेशान बूढ़ा बेचारा, दफ्तर में बनाने लगा था काम नहीं करने के हजार बहाने।

तंग आकर बॉस ने उसे लम्बी छुट्टी पर जाने का हुक्म सुनाया, बूढ़े ने छुट्टी लेकर घर पर ही बैठे बीवी को मनाने का प्रोग्राम बनाया।

अगले दिन बिजली गुल थी और शाम ढल रही थी। गर्मी से बेचैन, अनमने भाव से बीवी छत पर टहल रही थी।

रोमांटिक दृश्य देखकर बूढ़े के मन में एक विचार आया। एक कविता बनाकर बीवी को मनाने का असरदार योजना बनाया।

पर बूढ़े ने बीवी के कान के पास कविता इतनी जोर से गाया कि बीवी का पारा चढ़ गया। इससे पहले की बूढ़ा कुछ समझ पाता, बीवी ने बूढ़े के गाल पर एक झन्नाटेदार थप्पड़ जड़ दिया।

हैरान-परेशान बूढ़ा नीचे की ओर जल्दी-जल्दी भागा। दरवाजे से झूल रही एक काँटी में फंस गया उसकी धोती का धागा।

छटपटाते बूढ़े को पीछे आती बीवी ने गरदन से पकड़ा, मजाक-मजाक में ही उसके बनियान में डाल दिया प्लास्टिक का मकड़ा।

हड़बड़ाकर बेचारा बूढ़ा सीढ़ियों से फिसलता नीचे आया, बौखलाया हुआ बीवी के पास जाकर पैरों में लगी चोट दिखलाया।

बोला - “चोट मेरे पैरों में नहीं, मेरे दिल में लगी है, बीवी तो रही नहीं, अब सिर्फ मेरी तकलीफ ही मेरी सगी है।”

बूढ़े की बेतुकी बातें सुनकर, बीवी का पारा फिर चढ़ा, अपनी हस्तकला का उत्कृष्ट नमूना दिखाते हुए, एक और थप्पड़ जड़ा।

चिल्लाकर बोली, “मुझसे शादी की इच्छा भी तुमने ही जताई थी और सुहागरात भी मेरे बजाय, मेरी सहेली के साथ मनाई थी।”

“आज मैं तुम्हें छोड़कर अपने मायके जाती हूँ, औरत क्या चीज होती है, वह मैं तुम्हें दिखाती हूँ।”

यह कहकर बीवी ने सामान उठाया, निकल पड़ी मायके, खाना तो दूर, बूढ़े को लाले पड़ गये चाय के।

अगले ही दिन बूढ़े ने जाकर शर्माजी का पैर पकड़ा, बोला, “आपके मकान ने मुझे बना दिया है बलि का बकरा।”

चाहो तो एक हजार और लेकर मेरा पीछा छोड़ो, उससे भी काम न चल पड़े, तो ये लो, मेरा सिर फोड़ो।

शर्माजी ने बूढ़े की दयनीय स्थिति पर बड़ा खेद जताया, एक हजार और वसूलते हुए उसे बाहर का रास्ता दिखाया।

उसी दिन से वह मकान न०-१३ अपनी बदनसीबी पर आज तक रोता है, क्योंकि कोई भी शादीशुदा व्यक्ति, उसमें जाने से पहले सौ बार सोचता है।

+++++

“व्यक्ति स्वयं के द्वारा जितना छला जाता है, दूसरों के द्वारा आज तक उतना कभी नहीं छला गया।” - ग्रेनविल -

पुनर्जन्म

धीरज कुमार,
एम0टी0एस0 (जी0एम0)

“चन्द्रभूषण” हाँ यही तो नाम था उस लड़के का, जो खगड़िया जिले के अलौली गाँव में रहता था। उसका जन्म एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। उसके पिता पेशे से दुकानदार थे। उसने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा सरकारी स्कूल में ही पायी। जब वह कुछ बड़ा हुआ, तो हाई स्कूल में उसने अपना नामांकन कराया। देखते ही देखते मैट्रिकुलेशन की परीक्षा सिर पर कैसे आ गई, उसे पता नहीं चला। वह दिन-रात मेहनत कर परीक्षा की तैयारी करने लगा। उसे यह भय सता रहा था कि अगर वह मैट्रिक की परीक्षा में फेल हो गया तो वह किसी को मुँह दिखाने के काबिल नहीं रहेगा। उसके घर वाले जी भरकर कोसेंगे। वह मैट्रिक की परीक्षा में शामिल हो गया, लेकिन लाख कोशिशों के बावजूद वह मैट्रिक की परीक्षा में फेल हो गया।

अब उसके मन में बहुत तरह के विचार आ रहे थे। उसकी हिम्मत नहीं हो पा रही थी कि वह अपना रिजल्ट लेकर घर वालों के पास जाये। उसका दिमाग घूमने लगा। अन्त में मन में आत्महत्या करने के विचार से रेल की पटरियों पर खड़ा हो गया। ट्रेन पल-प्रतिपल पास आती जा रही थी। अचानक एक घटना घटी, उसने आँखें मूँद ली, देखा कि उसका करीबी दोस्त निलेश ने उसे ट्रेन की पटरियों से दूर ढकेल दिया। उसके कानों में निलेश के कुछ शब्द पड़े – मेरे दोस्त, यह जिन्दगी अनमोल है, इसे तुम यूँ ही मत मिटाओ। अरे क्या हुआ, एक परीक्षा में पास नहीं हुए, अगले बार फिर से परिश्रम करो तो तुम प्रथम श्रेणी से परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।

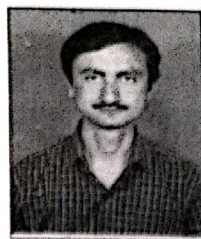
निलेश के इन्हीं बातों का उसपर जादुई असर हुआ। अब उसके मन से निराशा के बादल छट चुके थे, ऐसा लगा जैसे उसका पुनर्जन्म हुआ हो। उसने फिर से कड़ी परिश्रम की। जब उसका परीक्षा परिणाम आया तो वह अपना रिजल्ट देखकर खुशी से उछल गया, क्योंकि उसने अपने जिले में अव्वल स्थान प्राप्त किया था।

+++++

“उस व्यक्ति के लिए कुछ भी असंभव नहीं है, जो संकल्प कर सकता है और फिर उस पर आचरण कर सकता है, सफलता का यही नियम है।”

– मोराबी –

गन्ना एक उपयोगी फसल



श्री प्रमिल कुमार दूबे,
(डी०ई०ओ०)

जब हम मिठास की बात करते हैं तो बरबस हमारा ध्यान गन्ना (ईख) की तरफ जाता है। ईख से हम अनेक प्रकार के राब, मिश्री, गुड़, चीनी इत्यादि खाद्य पदार्थ प्राप्त करते हैं।

इतिहास में एक ऐसा समय भी रहा है जब हमारे यहाँ कोई अतिथि आता था तो उसे हम गुड़ या मिश्री मिला हुआ दूध से उसका स्वागत करते थे। कुछ समय पहले तक जो आज भी कहीं-कहीं देखने को मिलता है कि कोई अतिथि हमारे यहाँ आने से उसे गुड़ की भेली एवं पानी देकर उसका स्वागत करते हैं, लेकिन अफसोस आज गुड़ का स्थान ठण्डा पेय (कोका-कोला, फूटी आदि) मिलावटी मिठाइयाँ इत्यादि खाद्य एवं पेय पदार्थों ने ले लिया है।

दक्षिण भारत में कहीं-कहीं तार-खजूर से गुड़ और शक्कर तैयार की जाती है। पश्चिम एशिया का देश खजूर से यह काम लेते हैं। यूरोपीय देश चुकंदर से चीनी तैयार करते हैं। और तो और अब बाजार में सैकरीन नाम से कृत्रिम चीनी उपलब्ध है, जो मधुमेह रोगियों के लिए निरापद बताई गई है। किन्तु चीनी एवं उससे अन्य स्रोतों को प्राप्त करने का सबसे प्रमुख स्रोत गन्ना ही है।

गन्ना विश्व में ब्राजील, भारत, चीन, थाईलैंड, कोलम्बिया, अर्जेन्टीना, अमेरीका में मुख्य रूप से उगाया जाता है। गन्ना उत्पादन में विश्व में भारत का स्थान दूसरा है। भारत में गन्ने की खेती लगभग 32 लाख हेक्टेयर भूमि में की जाती है। भारत में इसकी बहुत सारी किस्में पायी जाती है। हमारे यहाँ बिहार में उगायी जाने वाली प्रमुख किस्में सी०ओ०पी०-9206, बि०ओ०-141, बि०ओ०-137, बि०ओ०-147, सी०ओ०-89029 इत्यादि अच्छे प्रभेद की है। हमारे यहाँ बिहार में गन्ने की रोपाई दो ऋतुओं में की जाती है।

1. शरद रोप - समय, मध्य अक्टूबर से नवम्बर के अन्त तक।

2. बसंत रोप - समय, जनवरी के अन्त से मध्य मार्च तक।

हमारे यहाँ अधिकांश रोपनी बसंत मौसम में की जाती है, लेकिन शरद रोप में ईख का उत्पादन बसंत रोप से लगभग 20 से 25 प्रतिशत अधिक होता है। ईख एक व्यवसायिक फसल है। इसकी खेती आम के आम गुठली के दाम वाली कहावत चरितार्थ करती है। अर्थात्, ईख की खेती के साथ-साथ आलू, मक्का, मसूर, धनिया, भिण्डी, मूंग इत्यादि फसलें सफलता पूर्वक उगायी जाती हैं।

शरद रोप में आलू, मसूर, धनिया, मक्का इत्यादि एवं बसंत रोप में गरमा मूंग, उड़द, भिण्डी इत्यादि। रोपाई के लिए हमें बीज की स्वस्थ गुणवत्ता के आधार पर चुनाव करना चाहिए, जिनमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए:-

(क) बीज अनुशंसित एवं अच्छी किस्म की हो।

(ख) बीज रोग रहित तथा कीट व्याधि से मुक्त हो।

(ग) प्रत्येक गुल्ली में कम-से-कम तीन स्वस्थ आँखें हो।

(घ) खूँटी फसल से बीज नहीं लेना चाहिए।

(ङ) प्रायः 10 से 12 माह के बीच के पौधे का ही बीज लेना चाहिए।

गन्ना सदियों से स्वास्थ्यवर्द्धक एवं पौष्टिक माना गया है। ईख से प्राप्त गुड़ जो पुराना हो गया हो, आयुर्वेदिक में बहुत ही महत्वपूर्ण माना गया है। यह अग्निकारक, बलदायक, पित्तनाशक, मधुर, वातनाशक और रुधिर को स्वच्छ करने वाला है। ईख की कुछ उपयोगितायें निम्न हैं:-

1. गन्ने को चूसकर खाने से पीलिया रोगी को लाभ मिलता है तथा गन्ने के रस में निम्बु मिलाकर पीने से पीलिया रोग जल्द ठीक हो जाता है।

2. गन्ने के रस में अदरक का रस एवं नारियल पानी मिलाकर पीने से पाचन क्रिया सुधरती है। साथ ही साथ गला रोग में भी आराम मिलता है।
3. गन्ने के रस में आंवला व अनार का रस मिलाकर पीने से रक्ताल्पता दूर होती है।
4. हिचकी एवं उल्टी आने पर गन्ने का रस लेना काफी लाभदायक सिद्ध होता है।
5. नकसीर होने पर गन्ने का रस पीने से रक्तस्राव बंद हो जाता है।
6. गन्ने के रस में विटामिन-ए०, विटामिन-बी०, विटामिन-सी० पाया जाता है। इसके अलावा इसमें कैल्सियम, कार्बनिक लवण, लौह मैंगनीज एवं फास्फोरस भी मिलता है, जो स्वास्थ्य को समृद्ध एवं सुडौल रखने में मदद करता है।
7. गन्ने के रस में जल, सुक्रोज, फाइबर लिग्नस इत्यादि होता है, जो स्वास्थ्य के लिए गुणकारी है।
8. गन्ने का ताजा एवं छना हुआ रस भोजन के बाद पीने से वायु विकार नष्ट होता है।
9. गन्ना चूसकर खाने से दाँत एवं मसूढ़े मजबूत होते हैं।
10. अतः गन्ना (ईख) एक ऐसी फसल है, जिसका तना, पत्ती (सुखी व हरी), जड़ एवं इसका कोई भी चीज बेकार नहीं जाती है। सारी चीजें प्रयोग में आ जाती हैं, इसलिए ईख का फसल हर मानव को एक बार अवश्य लगाना चाहिए।

+++++

“यदि तुम प्राप्त करना चाहते हो तो अर्पित करना सीखो।”
- सुभाषचन्द्र बोस -

शहर से पेड़ कट गये

वैद्य (डा०) रामेश्वर राम
से०नि० वरीय लेखाकार,

पेड़ काटो, पेड़ काटो, टांगी से काटो,
आरी से काटो, कुल्हाड़ी से काटो,

तब हेलीकॉप्टर से गिरता हुआ,
राहत पैकेट नहीं पकड़ पाओगे,
चूँकि बाढ़ की तेज धार होगी।
जिसमें डूब जाओगे, मर जाओगे।।

पेड़ काटो, पेड़ काटो, टांगी से काटो,
आरी से काटो, कुल्हाड़ी से काटो,

दुनिया के सारे पेड़ एक साथ काट दो,
तब अगले 5वें मिनट में
आक्सीजन के बिना दम घुटने लगेगा।

पेड़ काटो, पेड़ काटो, टांगी से काटो,
आरी से काटो, कुल्हाड़ी से काटो,
दाँत से काटो, सब पेड़ काट दो।

तब आकाश का ओजोन परत फट जायेगा,
और सूर्य की तेज किरणें आर्येंगी,
जि स मे झु ल स जा आ रे गे ।

इसलिए कहता हूँ कि पेड़ मत काटो।
एक पेड़ 100 पुत्रों के समान होता है।

जब तुम रिटायर हो जाओगे तब,
अपने ही बहु-बेटों द्वारा प्रताड़ित होने लगोगे,

तब इसी पेड़ के नीचे आना,
यहाँ सकून मिलेगा।
सकून मिलेगा।
सकून मिलेगा।

+++++

“मृत्यु तो छुटकारा है, उसका स्वागत उसी तरह किया जाना चाहिए
जैसे किसी मित्र का किया जाता है।”

- महात्मा गाँधी -

लोग क्या कहेंगे

सुरेन्द्र लाल दास,
स० ले० अधिकारी

मनुष्य के जीवन में सफलता एवं असफलता में उसकी व्यक्तिगत सोच का बहुत बड़ा महत्व होता है। यूँ तो जीवन में सफल होना सभी चाहते हैं, किन्तु सफलता के मार्ग का निर्धारण एवं निर्माण स्वयं करना पड़ता है, जो आसान नहीं होता। इसके लिए अपनी कमजोरी को मजबूती में बदलने की आवश्यकता होती है। जीवन में आगे बढ़ने के लिए महत्वाकांक्षी होना एवं उस महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए एक बड़ा सपना देखने की आवश्यकता होती है।

चूँकि जीवन का दौड़ लम्बा होता है। अतः लक्ष्य को छोटे-छोटे भागों में बाँटकर उसे आसानी से पूरा किया जाता है। निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक बार छलांग लगाने के बजाय पग-पग बढ़ाकर कम तनाव के साथ प्रयत्न करना श्रेयस्कर माना गया है। हर अच्छे कार्य को प्रारम्भ करने में कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता है, जिसमें सबसे प्रमुख है, “लोग क्या कहेंगे”। मनुष्य जब भी कोई कार्य प्रारम्भ करने की बात सोचता है, तो उसके जेहन में हमेशा यह भय बना रहता है कि “लोग क्या कहेंगे”। उदाहरण के लिए एक योग्य व्यक्ति डॉक्टर अथवा इंजीनियर बनना चाहता है, परन्तु आर्थिक विपन्नता के कारण उस लक्ष्य को प्राप्त करना उसके लिए बेहद कठिन है। मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को ट्यूशन इत्यादि करके दूर किया जा सकता है, किन्तु वह ट्यूशन आदि इसलिए आरम्भ नहीं कर पाता है कि ऐसा करने पर “लोग क्या कहेंगे”। परिणामस्वरूप वह व्यक्ति योग्य होते हुए भी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल रहता है।

“लोग क्या कहेंगे” यह एक प्रकार का नकारात्मक सोच है, जो मनुष्य के विकास में बाधक सिद्ध होता है। यही सोच हमारे समाज में लड़कियों की शिक्षा एवं विकास में भी बाधा उत्पन्न करता है। आज हमारे समाज में अधिकांश लोग यही सोचते हैं कि अपनी लड़कियों को शिक्षा के लिए बाहर भेजने के बाद लड़कों के साथ पढ़ने पर “लोग क्या कहेंगे”। यदि इस सोच को नकारा नहीं जाता तो आज लड़कियाँ अंतरिक्ष में अपना कदम नहीं रख पाती और प्रतिभा इसी सोच की बलि चढ़ जाती है। यदि इस नकारात्मक पहलू को दरकिनारा कर आगे नहीं बढ़ा जाता तो आज जितने भी अविष्कार हुए हैं अथवा हो रहे हैं, उसपर विराम लग जाता।

“लोग क्या कहेंगे” इस सोच को छोड़कर यदि राइट्स बन्धु आगे नहीं बढ़े होते तो शायद हवाई जहाज का निर्माण नहीं हुआ होता, क्योंकि जब उन्होंने हवा में उड़ने की बात की थी, लोगों ने उनका काफी मजाक उड़ाया था। हमारे पूर्व राष्ट्रपति डा० अब्दुल कलाम एवं उच्चतम न्यायालय के वर्तमान न्यायाधीश माननीय कपाड़िया साहब काफी परिश्रम के साथ जीवन के अनेक कठिनाईयों से जूझते हुए इस मुकाम पर पहुँचे। आरम्भिक दिनों में वे लोग कई छोटे-छोटे कार्य भी किये, परन्तु उनके जेहन में कभी भी यह बात नहीं आई कि “लोग क्या कहेंगे” और जिसकी परिणति एक दिन ऐसा हुआ कि आज हम सब उन महापुरुषों को देखकर गौरवान्वित महसूस करते हैं।

समाज में हर प्रकार के लोग हैं, जो अच्छे कार्य करने वालों की भी आलोचना करने से बाज नहीं आते हैं, जबकि बुरे कार्य करने वालों की बड़ाई करने से नहीं

चूकते। उदाहरणस्वरूप, दहेज एक सामाजिक कुरीति है एवं इसका लेन-देन कानूनन अपराध है। इस बात को सबलोग भली-भाँति जानते हुए भी इसका खुलकर प्रयोग करते हैं। यदि कुछ लोग इसके खिलाफ जाना भी चाहते हैं तो सामाजिक व्यवस्था एवं “लोग क्या कहेंगे” की दुहाई देकर इस कुरीति में शामिल होने के लिए उन्हें मजबूर किया जाता है।

“लोग क्या कहेंगे” की हीन भावना से मनुष्य ग्रसित होकर अच्छे कार्यों से मुँह मोड़ने का प्रयास करता है। सुधि पाठकों से मेरा विनम्र निवेदन है कि “लोग क्या कहेंगे” यह सोचकर अपने अन्दर नकारात्मक उर्जा का सृजन न होने दें।

अन्त में एक गाने का वो मशहूर बोल याद आता है:-

“लोग क्या कहेंगे, लोगों का काम है कहना”।

+++++

“नम्रता, प्रेमपूर्ण व्यवहार तथा सहनशीलता से मनुष्य तो क्या देवता भी वश में हो जाते हैं।”
-लोकमान्य तिलक -

कॉलेज का वह भयावह दिन

श्री हरेराम प्रधान,
अनुभाग अधिकारी

आज भी वह दृश्य याद आने पर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। बात उन दिनों की है, जब हमलोग हाई स्कूल की पढ़ाई के पश्चात् कॉलेज में दाखिला लिए थे। अपने-अपने गृह जिलों को छोड़कर शहर में कॉलेज की शिक्षा ग्रहण करने के लिए कई लोग राँची गये थे। मैं भी उन लोगों में से एक था।

बचपन में पढ़ाई के साथ-साथ पहलवानी का भी शौक था। देहात में किसान परिवार में जन्म हुआ था। दूध-दही की कमी नहीं थी। शरीर दृष्ट-पुष्ट था। पहनावा धोती-कुर्ता था तथा कंधे पर एक गमछा भी रहा करता था।

भैया ने मेरा दाखिला राँची कॉलेज, राँची में करवा दिया। राँची कॉलेज, राँची मोरादाबादी में है। उन दिनों आज जैसा अगल-बगल में बहुमंजिली इमारतों की भरमार नहीं थी। हाँ, कॉलेज का कैम्पस बहुत बड़ा था।

कॉलेज का पहला दिन था। हम पढ़ने के लिए गये थे। पता नहीं चलता था कि किस कमरे में पढ़ने के लिए बैठें। खैर, नोटिस बोर्ड को देखने से पता चला कि किस घंटी में कमरा में पढ़ने के लिए बैठना है। नया कॉलेज, नया वातावरण, नई जगह तथा कोई दोस्त भी जान-पहचान का नहीं था, परन्तु थोड़ी देर में ही पहनावा एवं बोली के चलते जान-पहचान होने लगी। बात-बात में भोजपुरी बोली के कारण एक लड़का नजदीक आया और उसने पूछा - “कहाँ से आये हो” ? हमने बताया कि आरा जिला का रहने वाला हूँ, राँची में पहली बार आया हूँ। वह भी मेरे गृह जिला का ही रहने वाला था, परन्तु हाई स्कूल की पढ़ाई वह राँची से ही किया था एवं वहाँ के वातावरण से वह परिचित हो गया था।

हम दोनों दोस्त क्लास में बातचीत ही कर रहे थे, तब तक चार-पाँच की

संख्या में उम्र-दराज के लड़के आये और बारी-बारी से सबका नाम पूछने लगे। अपशब्द भी बोलने लगे। खैर, थोड़ी देर में वे लोग क्लास-रूम छोड़कर बाहर चले गये। हमलोगों को पता नहीं चला कि वे लोग पढ़ाने आये थे या अपशब्द बोलने आये थे। हम चूँकि देहात के स्कूल से पढ़कर गये थे, शहरी पढ़ाई का तजुर्बा नहीं था, इसलिए कुछ नहीं बोले।

कुछ लड़कों ने कहा कि हमें प्रिंसिपल साहब से मिलना चाहिए और सारी बातें बतानी चाहिए। क्लास के सभी लड़के एवं लड़कियाँ प्रिंसिपल साहब के कमरे में चले गये और सारी बातें बतायी। प्रिंसिपल साहब सारी बातें समझ गये। उन्होंने कहा - “आपलोग स्कूल की पढ़ाई खत्म करके यहाँ कॉलेज में पढ़ने आये हैं। स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई में मूलभूत अन्तर है। स्कूल में एक बार उपस्थिति दर्ज की जाती है, जबकि कॉलेज की हर घंटी में उपस्थिति दर्ज की जाती है। जिस व्यक्ति के हाथ में उपस्थिति पंजी और डस्टर हो, उसी को समझें कि वह लेक्चरर है, अन्यथा वह अन्तिम वर्ष का छात्र भी हो सकता है, जैसा कि आपलोगों ने देखा। वे सब अन्तिम वर्ष के छात्र ही होंगे, जिनमें से कोई लेक्चरर नहीं था अन्यथा वे अपशब्द का इस्तेमाल नहीं करते। ऐसा कहने के बाद प्रिंसिपल साहब ने हमलोगों को विदा किया। कुछ देर के बाद घंटी बजी और छुट्टी हो गई। हम सब अपने-अपने घर चल दिये।

दो दिन छुट्टी थी, तीसरे दिन कॉलेज खुला। हमलोग कॉलेज गये। क्लास-रूम में हमलोग बैठे ही थे कि वही चार लड़के, जो देखने में लेक्चरर जैसे लग रहे थे, पर किसी के हाथ में उपस्थिति पंजी एवं डस्टर नहीं था, आ धमके। हमलोगों को समझते देर नहीं लगी कि ये लेक्चरर नहीं, अन्तिम वर्ष के छात्र ही होंगे। उनमें से तीन बेंच पर बैठ गये और एक लेक्चरर की भूमिका में खड़ा होकर नाम, स्कूल का नाम, पिता का नाम और पता के साथ-साथ बहुत सी बातें पूछने लगा। मेरा तो खून खौल रहा था। मेरे बगल में मेरा गृह जिला का दोस्त मिश्रा

भी बैठा था। उसने कहा कि जाने दो, चले जायेंगे सब।

इसी बीच तथाकथित लेक्चरर की नजर मुझपर पड़ी और उसने मुझे खड़ा होने का आदेश दिया। उसके बाद उसने उलूल-जलूल प्रश्न पूछना शुरू किया। कहा - “पंडित, तुमको तो संस्कृत पढ़नी चाहिए।” तुम्हें बनारस जाना चाहिए था। तुम राँची क्यों आ गये हो? बोलो, जवाब दो, इतनी बड़ी ‘टिक’ क्यों रखे हो? बताओ! डपट कर कड़ी आवाज में पूछ।

मैं खड़ा था ही, मैंने कहा - नजदीक आकर बताता हूँ। इतना कहकर हम जल्दी से उसके पास गये, क्लास-रूम की छिटकनी बन्द कर दिये और उसे उठाकर पटककर दो-चार हाथ भी रसीद कर दिये और उसके बाद तो क्लास के सभी लड़के मिलकर उन चारों पर चौतरफा वार करने लगे। लात-घूसों की बारिस कर उनकी मरम्मत कर दी। उन चारों की घिसी-पीटी बंद हो गई। हाथ जोड़कर क्षमा माँगने लगे। इसी बीच हमलोग क्लास-रूम की छिटकनी खोलकर क्लास से बाहर निकल गये और अपने-अपने घर को चल दिये।

घर जाकर हम अपने भैया से सारी बातें बताये। उन्होंने कॉलेज जाने से मुझे मना कर दिया और उन्होंने कहा - और लड़के तो पहचान में नहीं आयेंगे परन्तु तुमको वे पहचान जायेंगे। दूसरे दिन हम कॉलेज नहीं गये। मिश्रा भी मेरे घर आया और बोला कि प्रथम वर्ष बनाम अन्तिम वर्ष के बीच कॉलेज में झगड़ा हो रहा है। अन्तिम वर्ष वाले लड़के प्रथम वर्ष के लड़कों को खोज-खोज कर पीट रहे हैं। खासकर तुमको (तथाकथित पंडित को) खोज रहे हैं। अन्तिम वर्ष वाले छात्र कह रहे हैं कि “वह धोती कुर्ता एवं गमछा वाला पंडित ही छिटकनी बन्द किया था और मार-पीट की शुरुआत की थी।” इसलिए उसे ही ढूँढ़ो और उसके किये की सजा दो। इसलिए हम तुमको कहने आये हैं कि अभी कॉलेज मत आना। माहौल शांत हो जायेगा तब देखा जायेगा। ऐसा कहकर मिश्रा चला गया। भैया ने भी कहा कि अभी तुम अपने गाँव चले जाओ। दस दिनों बाद दशहरा एवं

छठ की छुट्टी होने वाली थी। भैया के कहने पर हम अपने घर यानि गृह जिला चले गये।

दो महीना बाद पढ़ने को हम पुनः राँची चले गये। कॉलेज का माहौल शांत हो गया था, परन्तु कॉलेज जाने से पहले भैया ने हमारी हुलिया बदलवा दी। माथे की ठीक कटवा दी, धोती-कुर्ता के बदले फुलपैट-शर्ट सिलवा दिये। कंधे से गमछा हट गया। पहले तो मुझे पैट-शर्ट पहनने में अनमख बरता था, परन्तु समय की नजाकत को देखते हुए ऐसा करना पड़ा। ऐनक देखने पर पर लगता था कि अब कोई नहीं कह सकता है कि यह वही पंडित है, जो दो महीना पहले दिखता था। कॉलेज जाने लगा और पढ़ाई-लिखाई ठीक ढंग से चलने लगी। कॉलेज का माहौल भी बदल गया था। अब समझ में आता है कि वह एक तरह का तथाकथित “रैगिंग” ही था।

+++++

“प्रेम ही स्वर्ग का मार्ग है, मनुष्यत्व का दूसरा नाम है। समस्त प्राणियों से प्रेम करना ही सच्ची मनुष्यता है।”- गौतम बुद्ध -

शहर से जुगनू भाग गये

वैद्य (डा०) रामेश्वर राम,
से०नि० वरीय लेखाकार,

बचपन में हम जुगनू पकड़ा करते थे।
जुगनू पकड़ने के लिए हम बाजी लगा देते थे।

कोई 50, कोई 100, कोई 200 जुगनू पकड़ा करते थे।
उन जुगनूओं को माचिस के खाली डब्बा में बंद कर देते थे।

और उन जुगनूओं के प्रकाश के सहारे हम
गाँव की तंग अंधेरी गलियों में अपने घर तक पहुँच जाते थे।
और तब हम उन जुगनूओं को उड़ा देते थे।

आज शहर से जुगनू भाग गये।

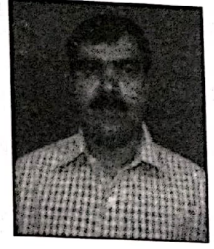
हमें शहरों में भी पेड़/झाड़ियाँ लगाना होगा,
और जंगलों में जाकर जुगनूओं को न्योता देना होगा।

तब जुगनू शहर में भी आयेगें, शुभ संकेत दे जीवन पायेंगे। यहाँ का
पर्यावरण शुद्ध है, यहाँ का पर्यावरण शुद्ध है। यहाँ का
पर्यावरण शुद्ध है, यहाँ का पर्यावरण बिल्कुल शुद्ध है।

+++++

“स्वाभिमानी मनुष्य मर मिटता है, पर किसी के सामने दीन नहीं बनता। आग बुझ भले ही जाय, पर जीवित रहते वह ठंडी नहीं होती।”

— नारायण पंडित —



अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय
स०ले०अ०/इ०डी०पी०

कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु । मानव को कर्म करने की स्वतंत्रता है। इस कर्म हेतु प्रकृति से जो शक्तियाँ उसे प्राप्त हैं, उसके सदुपयोग अथवा दुरुपयोग की भी स्वतंत्रता उसे है। सदुपयोग से सत्कर्म एवं दुरुपयोग से दुष्कर्म होते हैं। मानव की सीमा यहीं तक है। अपने कर्मों के फल के लिए वह नियति के हाथों परतंत्र है और इस संबंध में नियति का निर्णय अन्तिम और एकदम अन्तिम होता है। इन्हीं सद्प्रवृत्तियों/दुष्प्रवृत्तियों के बीच जीवन की गाड़ी चलती रहती है। जीवन के किसी पड़ाव पर मनुष्य अपने कर्मों का मूल्यांकन अपने हिसाब से करता है और संतोष अथवा पश्चाताप का अनुभव करता है।

ठीक इसके विपरीत जीवन में कुछ स्वस्फूर्त (spontaneous) छोटी-मोटी घटनाएँ होती हैं, जो उस समय तो काफी भारी पड़ता है, परन्तु बाद में उसे याद कर, बिना मुस्कुराए/आह्लादित हुए नहीं रहा जा सकता।

इस लेख के माध्यम से ऐसी ही कुछ घटनाओं को आपके साथ बाँटना चाहता हूँ।

खैनी

दुष्प्रवृत्तियों के प्रति इंसान स्वाभाविक रूप से आसक्त होता है और इसका वरन वह स्वाभाविक रूप से कर लेता है। बच्चों को अच्छे संस्कार के लिए जहाँ कड़ी मसक्कत करनी पड़ती है, वहीं पान, सिगरेट, तम्बाकू आदि के सेवन का अवगुण उनमें बिना प्रशिक्षण के ही (आस-पड़ोस, सिनेमा, टी०वी० आदि देखकर) आसानी से आ जाता है। मेरे ख्याल से इन अवगुणों से दूर रहने की प्रबल इच्छाशक्ति न होना ही इसके शिकार का कारण बनता है। अतएव तमाम अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने प्रतिपाल्य में इन अवगुणों से दूर रहने के लिए

प्रबल इच्छाशक्ति उत्पन्न करें। इन अवगुणों के शिकार व्यक्ति को देखकर मेरे मन में उनके प्रति वितृष्णा एवं सहानुभूति दोनों ही उत्पन्न होते हैं। ऐसे लोगों को (मेरे पहचान में हो अथवा नहीं) मैं प्रायः नसीहत तक दे डालता हूँ:- “छोड़ दीजिए इस असभ्य आदत को, इससे कुछ भी लाभ नहीं।” हालांकि इस नसीहत देने की आदत से मैं कई बार विकट वाद-विवाद में फँस गया हूँ और कई बार अवसर पर प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है।

सन् 2008-09 की बात है, पूर्वी क्षेत्र शतरंज प्रतियोगिता, जो गैंगटोक में होनी थी, में कार्यालय के प्रतिनिधित्व हेतु मेरा एवं एक वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी का चयन हुआ। सम्प्रति लेखा-परीक्षा अधिकारी महोदय राँची में पदस्थापित हैं और उनके भारी भरकम पद (designation) के उल्लेख से बचने के लिए मैं इस लेख में मैं उन्हें (Sirjee) सरजी से संबोधित करना उचित समझता हूँ। सरजी राँची कार्यालय से स्थानांतरित होकर आए थे और उनसे कोई जान-पहचान मेरी नहीं थी, तथापि यात्रा की तिथि सहित अन्य बिन्दुओं पर विचार-विमर्श हेतु मैं दो बार उनके कक्ष में गया, परन्तु उनसे मुलाकात नहीं हो सकी थी। अगले दिन Sirjee स्वयमेव मेरे पास आए, मैंने उनकी वरीयता का पूरा सम्मान रखते हुए कहा, “क्यों कष्ट किया आपने, मुझे ही बुला लिया होता!” कोई बात नहीं, मैं ही चला आया। कई महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार-विमर्श करना है, टिकट आदि की भी तो व्यवस्था करनी है। यथोचित आदर के साथ मैंने उन्हें कुर्सी देते हुए कहा - बिल्कुल, बहुत जरूरी है।

मैंने अपने दराज से कागजात, जिसमें खेल (match) से संबंधित यात्रा-विवरणी, गन्तव्य स्थान आदि की विवरणी थी, निकाला ताकि यात्रा एवं अन्य जरूरी बातों पर आपसी विमर्श कर अन्तिम निर्णय लिया जा सके। Sirjee बड़े ही आराम से खैनी निकालकर अपने हथेलियों पर मल रहे थे। कुछ देर बाद उन्होंने ताली बजाने के अन्दाज में अपने दोनों हथेलियों को पीटा और खैनी का चूर्ण मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा, चाहिए ?

नहीं ! धन्यवाद !! रुखे स्वर में मैंने प्रत्युत्तर दिया। उनकी अनुभवी आँखों ने मेरे चेहरे पर फैले तिरस्कार के भाव को पढ़ लिया और उन्होंने बातचीत का

प्रसंग बदलना चाहा। मैंने उनकी बात लगभग अनसूनी करते हुए आदतन लगभग एक ही साँस में बोल उठा:-

“खैनी खाने की इस असभ्य आदत को छोड़ दीजिए, इससे कुछ भी लाभ नहीं” इससे हथेली और दाँत गंदे होते हैं, स्वास्थ्य संबंधी कई विकृतियाँ भी पैदा होती है। हथेली और मुँह से दुर्गंध आती है। रुपयों का अपव्यय होता है वह अलग।

Junior और नसीहत, वह भी सात-आठ कर्मचारियों के सामने, Sirjee के स्वाभिमान को ठेस लगी। मेरी टिप्पणी को उन्होंने व्यक्तिगत तौर पर लिया। उनका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। उन्होंने कड़े शब्दों में कहा:-

मैं क्या करूँगा और क्या नहीं, ये आपसे पूछकर करूँगा। कौन होते हैं आप नसीहत देने वाले? बड़े सुधारक बनते हैं, यदि सुधारक बनने का शौक है तो जाइए चौक-चौराहे पर, जो मन में आए बकिए। बड़ा सज्जन समझता था मैं आपको, आप तो ठहरे निरा। बड़े बुजुर्ग से बात करने नहीं आता, यही शिष्टाचार है। एक-दो लोगों ने बीच-बचाव करना चाहा, परन्तु उन्होंने किसी की नहीं सुनी। यह सरासर misbehaviour का मामला है, official manual के सर्वथा प्रतिकूल है। इस मामले को मैं उच्च अधिकारियों के पास ले जाऊँगा, छोड़ूँगा नहीं, याद रखिएगा। धमकी भरे अंदाज में उक्त बातें कहते हुए वे चले गए।

बेवजह के इस ड्रामे और Sirjee के क्रोध को देखकर मुझे ग्लानि हुई, मन बोझिल हो गया, उच्च-अधिकारियों से शिकायत की धमकी से मुझमें डर समा गया। अपनी आदत पर मुझे खीज हो रही थी, सोचा, बेवजह विवाद को जन्म दे दिया।

लेकिन अब किया क्या जा सकता था, बात तो मुँह से निकल चुकी थी, अब तो फल की बारी थी, कर्म तो हो चुका था। फल तो नियति के हाथ में होता है और उसका निर्णय अन्तिम और एकदम अन्तिम होता है। चिन्ता, डर से कुछ नहीं होने वाला।

डर कैसा! मैंने सही बात कही है। कार्यालय में खैनी, सिगरेट कुछ नियम-कानून है या नहीं !! इन काल्पनिक तथ्यों से मैं अपने दिल को तसल्ली दे

रहा था। 'ऑल इज वेल, फिकर नॉट' !! अगर उन्होंने उच्च अधिकारियों से शिकायत की तो मैं भी अपना पक्ष मजबूती से रखूँगा। हालाँकि अन्दर से मैं डरा हुआ था, क्योंकि मामला senior बनाम junior का ले सकता था। मैं भी अपने पक्ष के लोगों को गोलबंद करने की फिराक में जुट गया।

सरजी ने सबसे पहले club के महासचिव और indoor secretary से मेरी शिकायत की:- कहा - कैसा आदमी के साथ मुझे भेज रहे हैं आपलोग ? उसमें शिष्टाचार तनिक भी नहीं है, वह निरा असभ्य है आदि।

पूरी वृत्तांत से अवगत होने के बाद सचिव महोदय ने कहा - ये उसकी पुरानी आदत है, वह तो चौक-चौराहे पर भी बिना पहचान वाले पर भी ऐसी टिप्पणियाँ कर देता है। कई अवसर पर उन्होंने इसके लिए जलालत भी झेली हैं आप तो ठहरे कार्यालय परिवार के सदस्य, इस टिप्पणी को अन्यथा न लें। दोनों सचिव महोदय ने मामले को ठंडा करने की नियत से मेरी तरफ से माफी भी माँग ली। Sirjee जी को अन्य लोगों से भी इस आदत की जानकारी हुई तो उनका गुस्सा बिल्कुल तिरोहित हो गया। क्लब के चार-पाँच सदस्यों के साथ हम दोनों की बैठक कराई गई। हम दोनों के शिकवे-शिकायत दूर किए गये और यात्रा का अन्तिम रूप दिया गया। समझौता हुआ कि लौटने तक खैनी के मुद्दे पर किसी पक्ष से कोई टिप्पणी/हरकत नहीं की जायेगी, आखिर कार्यालय और सूबे की प्रतिष्ठा का प्रश्न है।

नियत तिथि को हम दोनों साथ-साथ गैंगटोक के लिए रवाना हुए। Sirjee से मेरी अन्तरंगता बढ़ती गई। निश्चित रूपेण वे एक धनी व्यक्तित्व के स्वामी थे, हालाँकि यात्रा के दौरान प्रत्येक दो-छाई घंटे के अन्तराल पर सरजी ने खैनी का लुप्त उठाया। बीच-बीच में बोल पड़ते, खैनी बाँटकर खाने से आत्मीयता बढ़ती है, मूड फ्रेश होता है। गरीबी-अमीरी, विद्वान मूर्ख का भेदभाव मिटता है, समाज में समता को बढ़ावा देता है। यात्रा के दौरान उन्होंने सफाई वाला, coach-attendant, T.T.E. सभी वर्गों से खैनी का लेन-देन उन्मुक्त भाव से किया। मैं समझौते पर अडिग रहा, यात्रा के दौरान कहीं कोई टिप्पणी नहीं की। वैसे भी सरजी के साथ संबंध इतने मधुर हो गए कि विवाद की कोई गुंजाइश ही नहीं थी। कुल मिलाकर

यात्रा सुखद रही। आवंटित होटल में हम दोनों को एक ही कमरे में ठहराया गया। थोड़ी देर आराम करने के बाद हम दोनों होने वाले खेल की स्ट्रेटजी बनाने में मशगूल हो गए। कई तरीके जो अपनाये जाने थे, पर खुलकर विचार-विमर्श हुए। विरोधियों को चित्त करने के लिए कई ट्रैप का आदान-प्रदान किया गया। मानसिक रूप से हमलोग मुकाबले के लिए पूरी तरह तैयार थे।

अगले दिन नियत समय पर मुकाबले की शुरुआत हुई। प्रथम चक की समाप्ति पर मैं सरजी का परिणाम (result) जानने को उत्सुक था। उनका लटका हुआ चेहरा देखकर मैंने अनुमान लगा लिया था कि प्रथम चक में वे हार गये हैं। उनकी ओर मुखातिब होकर मैंने जान-बूझकर खेल पर कोई चर्चा नहीं की ताकि माहौल तनावपूर्ण न हो जाय और इसका असर आगे के चकों पर पड़े। किसी ने मुझे बताया कि organising committee के समक्ष मेरी पेशी होनी है। दरअसल मैच के दौरान सरजी ने खैनी खाने का उपक्रम opponent के मना करने के बावजूद दूसरी बार किया था और opponent ने इसकी शिकायत निर्णायक महोदय से कर दी थी।

निर्णायक महोदय ने तत्काल इस मैच को रोककर खेल का निर्णय सरजी के खिलाफ दे दिया था और इसी बाबत team के कप्तान होने के नाते मेरी पेशी का फरमान जारी किया था। पेशी के दौरान निर्णायक महोदय का कड़ा निर्देश था कि खेल के दौरान खैनी वाला प्रकरण न दुहराई जाय अन्यथा organising committee इसके लिए parent office को मजबूरन सूचित कर शेष चकों से team को वंचित कर दिया जायेगा। मैंने organising committee को पूर्णतया आश्वस्त किया कि इसकी पुनरावृत्ति नहीं होगी। सरजी भी इसके लिए दृढ़ प्रतिज्ञ थे कि भले ही सब चक हार जायें पर मैच के दौरान खैनी का उपक्रम नहीं करेंगे।

खेल के दौरान बढ़ते तनाव से निजात पाने के लिए खैनी मेरे लिए परम आवश्यक है, इसके बिना मैं एक भी मैच नहीं जीत सकता। Team का प्रदर्शन प्रभावित होगा, लौटकर क्या जवाब देंगे। बुझे दिल से सरजी ने ये बातें मुझसे कही। पिछले रात जहाँ हमलोग strategy बना रहे थे, आज एक नई समस्या से जूझ रहे थे। दोनों ही इसका हल के लिए माथा-पच्ची एक कर रहे थे। मन में एक

विचार आया, मैच के दौरान खैनी का उपकम (हथेली पर मलना और ताली देना) नहीं किया जाय, बल्कि readymade खैनी कागज के पुरजे में रख लिया जाय और जब इसकी तलब हो, bathroom/urinal के बहाने खेल क्षेत्र से बाहर जाकर इसे गटक लिया जाय। तरकीब सरजी को भा गई। सिद्ध तत्काल उन्होंने दो-तीन पुड़िया तैयार कर डाला। उनकी आँखों में विशेष चमक थी, इन्तजार था तो बस मुकाबले का।

सच्चे उत्साह और लगन से किया गया प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाता। अगले मुकाबले में खेल के लिए निर्धारित समय से पहले ही कम समय में सरजी ने विपक्षी को धराशाही कर दिया। मेरा खेल, जो काफी लम्बा चला, सरजी ने पूरी तरह सराहा। हम दोनों की जीत इस चक्र में हुई। निर्णायक महोदय मेरे पुराने मित्रों में से एक हैं, उनमें भी यह उत्सुकता थी कि सरजी ने बिना खैनी के यह कमाल कैसे कर दिखाया। unofficially उन्हें एक तरकीब से अवगत कराया गया। उन्होंने कहा, वाह ! साँप भी मर गया और लाठी भी नहीं टूटी। ठीक ही कहा गया है, “बिहारी सब पर भारी।”

Tournament की समाप्ति के पश्चात् team की स्थिति सम्मानजनक रही। सरजी खैनी खाने के इस नये अविष्कार से काफी प्रसन्न थे और अब वे readymade खैनी फूर्सत के क्षणों में ही बना लिया करते थे, खैनी का उपकम वे अब शायद ही करते थे। वापसी के दौरान भी इन्होंने यही नुस्खा अपनाया। जब आवश्यकता महसूस हुई, पूरजी से खैनी निकाला, गटका और पूर्जी फेंक दी। हाँ, माँगने की आदत इनकी जस की तस बनी रही। खैनी बनाते हुए जिस किसी पर इनकी नजर पड़ी, निःसंकोच उससे माँगा, भले ही वह सफाईवाला ही क्यों न हो।

पटना जंक्शन पर उतरते ही काले कोट पहने एक व्यक्ति (टी०टी०ई०/टी०सी०) ने टिकट की माँग की। सरजी ने झट ही उसके हथेली पर टिकट दे मारा। टिकट देखकर कालाकोट वाला चिल्लाया, ठहरिए! यह टिकट तो इस ट्रेन का है ही नहीं। दरअसल, वह टिकट पटना से जलपाइगुरी जाने की थी। इसमें चिल्लाने की क्या बात है, अभी अपेक्षित टिकट देता हूँ। सरजी ने अपनी सभी जेबें ढूँढ़ी, पर टिकट नहीं मिला। काले कोट वाले ने ऐंठकर कहा, टिकट हो

तब तो मिलेगा। क्या समझे थे, पुराने टिकट देकर आँखों में धूल झोंककर आप निकल जायेंगे? ऐसों को मैंने बहुत देखा और उन्हें जानता पहचानता हूँ, धोखाधड़ी करते हैं, अभी मैं आपलोगों को मजिस्ट्रेट के हवाले करता हूँ।

टिकट खो गया तो मैं क्या करूँ? कोच नम्बर और बर्थ नम्बर मुझे याद है, चाहें तो आप तहकीकात कर लीजिए, technology का जमाना है। शांत अंदाज में काले कोट वाले ने कहा, यह मेरा कार्य नहीं है। एक तो टिकट नहीं, उपर से धोखाधड़ी, सब समझता हूँ मैं। सरजी के प्रत्येक दलील के साथ कोट वाले की तल्खी बढ़ती गई, शायद उसे उम्मीद बंध गई थी कि मामले को रफा-दफा करने का प्रस्ताव हमलोगों के तरफ से दिया जायेगा और इसलिए वह मजिस्ट्रेट का धमकी देकर हमलोगों को भयभीत कर रहा था।

सुबह का खीज-खीज, उपर से यात्रा का थकान और टिकट संभालकर रख न पाने की झुंझलाहट, मैं अपने पर नियंत्रण न रख सका। 'शठे शाठयम समाचरेत' तो आप हमें बिना टिकट के ही मान रहे हैं। बिना टिकट का यात्री यहाँ इस प्लैटफार्म पर क्यों आयेगा? आपका दर्शन करने! कोई सिद्ध पुरुष हैं आप क्या? हजार रास्ते हैं बाहर निकले के, जितने दिन आपकी सेवा के हुए हैं, उससे अधिक रास्ते मुझे बाहर निकलने के मालूम हैं। शरीफ को तंग करते हैं, कहते हैं हम अपना इ्यूटी निभा रहे हैं। लानत है आपकी सेवा पर, और तो और, यदि मैं कहूँ कि टिकट आपने हमसे लेकर फाड़ दिया है और अपने इष्टसाधन के लिए अनाप-शनाप बके जा रहे हैं, तो !!! मजिस्ट्रेट को बुलाने का अधिकार सिर्फ आप ही को है, बुलाइए! मंत्रीजी का पड़ोसी हूँ, हद में रहिए! राही मासूम राजा के अंदाज में बोले गये इस संवाद से काले कोट वाले का तेवर नरम पड़ गये। बोला, मैं तो अपना इ्यूटी निभा रहा हूँ, आगे आपकी मर्जी। टिकट फाड़ने वाला धमकी काम कर गया था। उसके तेवर को भाँपते ही सरजी ने अपना तनाव दूर करने के इरादे से पहले से तैयार खैनी की पुड़िया निकाली और लगभग चिल्लाने के अंदाज में बोले। अरे! देखिये इ खैनियाँ तो ओरिजनलवे टिकटवा में लपेटा हुआ है। बेवजह इतना बखेड़ा हुआ, दरअसल गलती मेरी है। काले कोट वाले ने तत्काल खैनी-धर्म, थोड़ा मुझे दीजिएगा, कहकर निभाया। सरजी ने टिकट सहित,

खैनी टी0टी0 के हथेली पर रख दिये, बिना स्वमेव गटके !!!

खैनी का प्रभाव कहिए या उस संवाद का, मजिस्ट्रेट का धमकी देने वाला वह शख्स हमलोगों को ट्रॉली खींचने में मदद कर रहा था। दो-दो परिवर्तन, काले कोट वाले का व्यवहार एवं सरजी के खैनी को न गटकना, मेरे मन-मस्तिष्क को झकझोर रहा था, परन्तु इसके विश्लेषण की शक्ति मुझमें शेष बची नहीं थी। हमदोनों ने अपनी-अपनी राह ली।

कुछ दिनों में सरजी का स्थानांतरण राँची हो गया, परन्तु दूरभाष के माध्यम से हम जुड़े रहे, यदा-कदा बात होती रहती है। उन्होंने एक दिन बताया कि खैनी उन्होंने बिल्कुल छोड़ दिया है। खैनी छोड़ने का निर्णय उन्होंने गैंगटोक में ही ले लिया था, टिकट प्रकरण ने इसके लिए विशेष रूप से अभिप्रेरित किया और उन्हें इससे बड़ा सकून मिल रहा है। उनके सुधार से मुझे जो अनुभूति हो रही थी, उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

इस अनुभूति को आप भी महसूस कर सकते हैं कि जब कोई व्यक्ति आपके प्रयास से इस अवगुण को छोड़ दे। प्रयास तो करके देखिए, इसकी शुरुआत आप आज और अभी से ही कर दें, फल की चिन्ता नियति पर छोड़ दीजिए।

+++++

“अनिश्चितमना पुरुष भी मन को एकाग्र करके जब सामना करने को खड़ा हो जाता है, तो आपत्तियों का लहराता हुआ समुद्र भी दबकर बैठ जाता है।”

- तिरुवल्लुवर -

उप महालेखाकार बनाम लेखाकार

सन 2000 के आस-पास की घटना है। उप महालेखाकार महोदय भूतल स्थित सहायता कोषांग का निरीक्षण कर रहे थे। इस दौरान वहाँ मौजूद आगंतुकों की समस्या से वे अवगत हो रहे थे और तत्क्षण समाधान हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश संबंधितों को दे रहे थे।

एक आगंतुक (visitor) से उनकी समस्या के बारे में जब उनसे पूछा गया तो उस महोदय ने कुछ इस प्रकार बताया - “मैं फलनां बाबू से मिलने आया हूँ, वे इस कार्यालय के लेखाकार हैं, मैं अपनी समस्या उन्हीं को बताऊँगा किसी अन्य को नहीं।” सहायता कोषांग में मौजूद कर्मियों ने उस महोदय को बताया कि ये Deputy Accountant General हैं, अपनी समस्या इनके सामने बेहिचक रखे, त्वरित कार्रवाई होगी। इसपर आगंतुक महोदय बिल्कुल झल्ला गये और बोले:-

मुझे मूरख समझ रखा है क्या ? मुझे जब Accountant से direct मिलना है, तो अपनी समस्या Deputy के सामने क्यों रखूँ ? क्या समझते हो Deputy का अर्थ मैं नहीं जानता, अंग्रेजी का ज्ञान नहीं है मुझे ? अंग्रेजों के जमाने में पढ़ाई की है मैने, सप्तम कक्षा उत्तीर्ण हूँ, वह भी अंग्रेजी के साथ। मेरी गिनती पाँचवे वर्ग से ही होशियार विद्यार्थियों में होती थी। पिछले 36 वर्षों से सरकारी सेवा में हूँ, ये सारी बातें मेरी सेवा पुस्तिका में अंकित हैं, किसी ने हमपर आज तक उंगली नहीं उठायी, विश्वास न हो तो देख लीजिए मेरी सेवा-पुस्त। चले हैं मुझे समझाने।

उस महोदय ने यह बात पुनः दोहराया कि “अगर सहायता करना ही चाहते हैं तो फलनां बाबू को ही बुला दीजिए, मैं अपनी समस्या उन्हीं के समक्ष रखूँगा। ठीक ही लोग कहते हैं कि सही आदमी से भेंट हो पाना बहुत ही मुश्किल है।

उप महालेखाकार महोदय के आड़े/तिरछे प्रश्नों से जब उसका सामना हुआ, तो पाँचवें वर्ग के सबसे होशियार विद्यार्थी की सारी होशियारी निकल गई और बातों ही बातों में अपनी सारी समस्या इस शर्त के साथ कह डाला कि ये बातें वो सिर्फ Accountant महोदय को ही बतायेगा। वार्तालाप से जो तथ्य सामने आया, वह इस प्रकार था:-

वह एक सफाई वाला कर्मचारी है। तीन वर्ष पूर्व सेवा निवृत्त हो चुका था। लगभग दो माह पूर्व उसका पेंशन मामला इस कार्यालय में आया है। आगंतुक को यह पता है कि पेंशन मामलों का निष्पादन इस कार्यालय में लगभग डेढ़ माह में हो जाता है। दो माह बीत जाने और पेंशन कागजात नहीं मिलने से वह बहुत चिंतित है। इसी संबंध में वह तहकीकात करने आया था। बड़े बाबू के निर्देश के अनुसार ही वह फलनां बाबू (Accountant) से मिलने के लिए जोर दे रहा था। पिछले ढाई वर्षों से पेंशन पेपर तैयार कर इस कार्यालय तक भेजवाने में उन्हें काफी परेशानी हुई है और इसी कारण से वह किसी पर विश्वास नहीं करता, सिवाय अपने बड़े बाबू के। बड़े बाबू के नसीहत से वह सिर्फ accountant बाबू से मिलना चाह रहा था।

उक्त पेंशनर की संचिका के साथ सहायता कोषांग में अविलम्ब उपस्थित होने का आदेश, संबंधित अनुभाग को उप महालेखाकार द्वारा दिया गया। अनुभाग में खलबली मच गई, चूँकि मामला ताजा था। संचिका मिल गई, अपनी स्तर से आश्वस्त हो लेखाकार महोदय अपने अनुभाग अधिकारी के साथ उप महालेखाकार के समक्ष उपस्थित हुए। सही-सही मामला निपट जाय, दिन सही से गुजर जाय, यही विचार लेखाकार एवं अनुभाग अधिकारी के मन में चल रहा होता है, जब उच्चाधिकारियों के सामने उनकी पेशी होती है। लेखाकार एवं अनुभाग अधिकारी की स्थिति उप महालेखाकार महोदय के सामने थी, आगंतुक को Deputy का अर्थ कुछ-कुछ समझ में आने लगा था, जैसा कि उसके चेहरे से प्रकट हो रहा था। उप महालेखाकार महोदय द्वारा संचिका का अध्ययन किया गया, उसमें कहीं कोई खोट नहीं थी।

अंग्रेजों के जमाने के पाँचवें वर्ग के उस होशियार विद्यार्थी का पेंशन से संबंधित प्राधिकार पत्र पन्द्रह दिन पहले ही कार्यालय से निर्गत हो चुका था। लेखाकार महोदय के साथ-साथ अनुभाग अधिकारी ने भी राहत की साँस ली, बला टली।

उप महालेखाकार महोदय के आदेश से उस आगंतुक को उसी वक्त Duplicate Intimation Memo जारी कर हस्तगत कराया गया। इस घटनाक्रम से उस पेंशनर को Deputy A.G. की शक्ति और गरिमा का अहसास हो गया था, परन्तु वह अंग्रेज जमाने के अंग्रेजी जान एवं पैंतीस वर्षों की सेवा का अनुभव पर कुछ पल पहले प्राप्त ज्ञान को हावी होने देना नहीं चाहता था। कागजात समेटते हुए बोल उठा:-

“बड़ा विचित्र कार्यालय है, यहाँ डिप्टी की भी चलती है।” सहायता कोषांग से प्रस्थान करने के पूर्व कृतज्ञता भरे भाव से Deputy A.G. को वह Salute करना नहीं भूला था। उसके झुंझलाहट एवं अविश्वास पर सेवाभाव का मरहम लग चुका था। उसके हाव-भाव, कार्यालय के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रहे थे। आज भी इस घटना की चर्चा कार्यालय में होती रहती है।

+++++

“यदि तुम्हारा अहंकार चला गया है, तो किसी भी धर्म पुस्तक की एक पंक्ति भी पढ़े बिना व किसी भी देवालय में पैर रखे बिना, तुम जहाँ बैठे हो, वहीं मोक्ष प्राप्त हो जाएगा।”

- स्वामी विवेकानंद -

वास्तु विषयक

श्री राम अनुग्रह प्रसाद
से०नि० व० लेखाकार

वास्तु शास्त्र एक व्यवहारिक विज्ञान है, जो ऊर्जा पर आधारित है। वास्तु के अनुसार प्रत्येक भूखण्ड के चार कोण और चार दिशायें मानी जाती हैं।

1. ईशान कोण : (घर का उत्तर-पूर्व कोण) - यह स्थान सबसे पवित्र तथा पूजा के लिए उत्तम स्थान है। बच्चों की शिक्षा का कोना भी माना जाता है। ईशान कोण में घर का मुख्य द्वार, भूमिगत पानी टंकी, नल लगाना शुभ है। ईशान कोण से निकला जल अमृत के समान होता है तथा इसे पीने से असाध्य बीमारियों आदि से छुटकारा मिल जाता है। ईशान कोण में शयन कक्ष और रसोई घर कभी भी न बनायें।
2. आग्नेय कोण : (दक्षिण-पूर्व कोण) - इस कोण में बिजली का मीटर, जेनरेटर आदि लगाना अथवा रखना शुभ माना जाता है। इस कोण में आग जितनी अधिक जलती है, उतना ही शुभ है। इस कोण में रसोई घर बनाना अति उत्तम है।
3. वायव्य कोण : (उत्तर-पश्चिम कोण) - इस कोण में लड़कियों तथा मेहमानों के लिए कमरा बनाना शुभ है। सैप्टिक टैंक बनाने का यह सबसे उपयुक्त स्थान है। भंडार गृह इस दिशा में बनाना शुभ है।
4. नैऋत्य कोण : (दक्षिण-पश्चिम कोण) - इस कोण को सबसे भारी कोण माना जाता है। इस कोण में घर का सामान, स्टोर या घर के मुखिया का शयन-कक्ष होना चाहिए। घर का जितना भी भारी सामान रखे उतना ही शुभ है। ओवर हेड पानी की टंकी शुभ होती है। भूमिगत पानी की टंकी (बोरिंग) इस कोण में बनाना चाहिए। इस कोण को हमेशा ऊँचा रखें। भवन की चहारदीवारी मोटी होनी चाहिए।
5. सीढ़ियों की दिशा:-
 - a. सीढ़ी हमेशा दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर होना चाहिए। सीढ़ी ब्लॉक-वाइज दीवार के साथ लगी होनी चाहिए।
 - b. सीढ़ियों की शुभ गिनती 17, 23 और 29 मानी जाती है। कभी भी सम संख्या की सीढ़ी न बनायें। शुभ गिनती के लिए सीढ़ियों की कुल संख्या को तीन (3) से भाग करने पर यदि शेष दो (2) आता है, तो शुभ है।

c. सीढ़ियों के नीचे कभी भी (wash) वाश-बेसिन, शौचालय या रसोई-घर नहीं बनानी चाहिए।

6. शौचालय की शुभ तथा अशुभ दिशा:-

शौचालय हमेशा वायव्य-कोण (उत्तर-पश्चिम) से हटकर उत्तर दिशा या दक्षिण दिशा में बनायें। शौचालय का दरवाजा रसोई घर के सामने नहीं खुलना चाहिए। शौचालय की सीट कभी कभी भी पूरब या पश्चिम की तरफ नहीं होनी चाहिए।

7. उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में मकान बनाते समय कुछ नियमों का पालन अवश्य ही रखना चाहिए।

(क) रसोई घर में काला ग्रेनाइट नहीं लगाना चाहिए।

(ख) घर का सबसे नीचा स्थान उत्तर-पूरब कोना होना चाहिए।

(ग) दक्षिण की दीवार पर पूर्वजों की तस्वीरें अथवा घड़ी लगाना अशुभ माना जाता है।

(घ) पूजा करते समय या खाना बनाते समय मुँह पूरब की ओर होना चाहिए।

(ङ) मुख्य द्वार हमेशा अन्दर की तरफ खुलना चाहिए। दरवाजा चौड़ा और दो पल्लों वाला होना चाहिए।

(च) मकान के दक्षिण-पश्चिम में खिड़कियाँ कम होनी चाहिए।

(छ) शयन कक्ष का दरवाजा एक पल्ले का होना चाहिए तथा पलंग को हमेशा एक किनारे पर रखना चाहिए।

(ज) गैस चूल्हा कभी भी उत्तर दिशा में न रखें।

(झ) हवन कुण्ड हमेशा दक्षिण-पूरब में बनायें।

(ञ) खिले फूल का पौधा गमले में लगा रहने से पोजीटिव उर्जा की प्राप्ति होती है। सौभाग्य के लिए घर में ताजे फल जरूर रखें।

(ट) फर्नीचर हमेशा गोल किनारे वाला होना चाहिए।

8. कार्यालय में टेबल की स्थिति:-

क. बैठने वाला व्यक्ति का टेबल दरवाजे के सामने बिल्कुल नहीं होना चाहिए, इससे अधिकारी/कर्मचारी की एकाग्रता भंग नहीं होती।

ख. टेबल को हमेशा दरवाजे से दूर एक किनारे में रखना चाहिए। टेबल के पास बैठने वाले व्यक्ति का मुँह दरवाजे की तरफ होना चाहिए।

- ग. प्रवेश द्वार के बाहर और भीतर गणेशजी की मूर्ति या चित्र एक ही आकार का लगायें।
- घ. जिनका प्रवेश द्वार नैऋत्य कोण यानी दक्षिण-पश्चिम कोण में हो, उन्हें गणेश जी की तस्वीरें प्रवेश द्वार के बाहर और भीतर अवश्य लगानी चाहिए।
9. लाफिंग बुद्धा - धन-दौलत के देवता :-
1. इनकी मूर्ति धन, सुख-समृद्धि का प्रतीक मानी जाती है। हँसता हुआ चेहरा हमें प्रेरणा देता है कि मेरी तरह हँसों और बढ़ा हुआ पेट, घर के सदस्यों की बीमारियों एवं दुःख-तकलिफों को अपने पेट में लेता है तथा बदले में खुशियाँ देता है।
 2. मूर्ति को हमेशा बैठक कक्ष या मुख्य द्वार के सामने की तरफ मुँह करके जमीन से तीन फीट की उँचाई पर रखनी चाहिए। इस मूर्ति की पूजा नहीं की जाती है। मूर्ति को शयन-कक्ष, रसोईघर तथा शौचालय में नहीं रखना चाहिए।
 3. लाफिंग बुद्धा खुद खरीदना बेहद शुभ माना जाता है। बच्चों के अध्ययन कक्ष में रख सकते हैं।
 4. जिन दम्पति को संतान नहीं है, उन्हें अपने शयन कक्ष के पश्चिम वाला भाग में बच्चों वाला बुद्धा रखने से पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है।
10. तस्वीर :-
- अपने कार्यालय में अपनी तस्वीर हमेशा दक्षिणी कोने में लाल पेपर के उपर लगायें और बैठक कक्ष में पूरे परिवार का चित्र लगायें, इससे परिवार की एकजुटता बनी रहेगी।
11. मछलियाँ :-
- मछलियाँ शयनकक्ष में ना रखें। मछलियों को उत्तर-पूरब या उत्तर दिशा में रखना शुभ है।
12. कुछ और भी विषय वस्तु से संबंधित कार्यों को ध्यान में रखना चाहिए :-
- (क) घर में पेन्डुलम वाली संगीत घड़ी लगानी चाहिए। घड़ी को कभी दरवाजे के उपर न लगायें।
 - (ख) तुलसी के पौधे मुख्य द्वार के दोनों ओर रखने से घर में सकारात्मक उर्जा हमेशा प्रवेश करती है।

- (ग) नारंगी के सुनहरे रंग के पौधे घर/कार्यालय के दरवाजे के सामने वाले दक्षिण-पूर्व दिशा के कोने में लगाना शुभ होता है।
- (घ) शयन-कक्ष में टी०वी० तथा आइना न रखें। ड्रेसिंग टेबल को कभी पलंग के सामने न रखें।
- (ङ) शयन-कक्ष में टी०वी० तथा आईना रखने की स्थिति में सोते समय कम से कम उसका प्लग निकालकर जरूर ढक देना चाहिए।
- (च) डायनिंग टेबल हमेशा लकड़ी का होना चाहिए। उत्तर दिशा में रखना अच्छा होता है।
- (छ) घर का मुख्य द्वार हमेशा लकड़ी का होना चाहिए। मुख्य द्वार के अगल-बगल में अच्छे फूलों का गमला रखना चाहिए।
- (ज) पानी की टंकी तथा नल से पानी की लीकेज को तुरंत बंद कर देना चाहिए।
- (झ) शौचालय का दरवाजा हमेशा बंद रखना चाहिए। किसी भी दरवाजे के उपर घड़ी या कलेंडर न लगायें।
- (ञ) घर की दीवार या छत पर उगे पीपल के वृक्ष अशुभ माने जाते हैं।
- (ट) ड्राइंग रूम में दक्षिण-पश्चिम के कोण में स्फटिक का झूमर अवश्य लटकावें तथा दो-तीन घंटे अवश्य ही झुलावें, इससे परिवार के सदस्यों का भाईचारा बना रहता है।
- (ठ) लम्बे गलियारे में वास्तु दोष दूर करने के लिहाज से बगल की दीवार पर दर्पण जरूर लगाना चाहिए।
- (ड) घर में बंद घड़ियाँ दुर्भाग्य को आमंत्रित करती है।
- (ढ) कैकटस के पौधे घर/कार्यालय/दुकान में कभी न लगायें। इसे घर के मुख्य द्वार पर कभी ना रखें।
- (ण) पति-पत्नी हमेशा एक ही तकिये (बड़ा सा) का प्रयोग करें। महाभारत या हिंसात्मक कोई भी चित्र/दृश्य घर में न लगावें।
- (त) खाली दीवार के तरफ मुँह करके ना बैठें। वास्तु शास्त्र के अनुसार इस दोष को दूर करने के लिए दीवार पर कोई अच्छी पेंटिंग या चित्र लगायें।

+++++

“व्यर्थ बोलने की अपेक्षा मौन रहना अच्छा है। यह वाणी की प्रथम विशेषता है। सत्य बोलना वाणी की दूसरी विशेषता है। प्रिय बोलना वाणी की तीसरी विशेषता है। धर्म बोलना वाणी की चौथी विशेषता है।

— वेदव्यास —

इतिहास

श्री अरुण कुमार पाठक
(वरिष्ठ लेखाकार)

वर्तमान में इस कदर खोये की इतिहास हो गये,
बिन्दास थे उनकी नजरों में, शायद अब बदमाश हो गये।
उनका वादा था साथ चलने का, उन्होंने साथ छोड़ा और हम वीरान हो गये।
वर्तमान में इस कदर खोये की इतिहास हो गये।

सिर्फ उन्हें खबर थी मेरे जाने की, उन्होंने रोका नहीं और हम फरार हो गये।
मैं चुपके से चला आया था, उनके आशियाने से,
उन्होंने ही याद दिलाया, आपका कुछ छुट गया, मेरा कुछ लेते चले गये।
वर्तमान में इस कदर खोये की इतिहास हो गये।

जख्म भी उनका था, मरहम भी उन्ही का था।
वो ठीक हो गये, हम बीमार रह गये।
उनका 'मन' न लगता था कभी मेरे बगैर,
मगर आज वो हमको उदास कर के चले गये।
वर्तमान में इस कदर खोये की इतिहास हो गये।

हम आप थे उनके लिए अचानक कौन हो गये,
जो कभी बुरा लगते थे उनको, वो जी हो गए और हम गौण हो गए।
वर्तमान में इस कदर खोये की इतिहास हो गये।

न कसमें खाई थी न वादे हुए थे फिर भी साथ चल पड़े थे,
हम वहीं पर अभी खड़े हैं, मगर वो हमसे आगे निकलते चले गए।
वर्तमान में इस कदर खोये की इतिहास हो गये।

“जो रोज बदले दोस्त वो दोस्ती के काबिल नहीं।
समाज की नजरों में भी गिर जाता है।
अपनी नजर में भी रहने के काबिल नहीं”

+++++

प्रेम ही स्वर्ग का मार्ग है, मनुष्यत्व का दूसरा नाम है। समस्त प्राणियों से प्रेम करना ही सच्ची मनुष्यता है। - गौतम बुद्ध -

जमीन

अश्विन अनुराग
सुपुत्र श्री प्रेम निवास मिश्रा
स०लेखा अधिकारी

कनबतरा, एक गाँव, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपनी जीवन-यापन के लिए कोई न कोई काम करता था। यहाँ के लोग मेहनती और कर्मप्रधान थे। सीधे-साधे और ईमानदार ग्रामीण, जो राजनीति और दुष्टता से कोसों दूर थे। इस गाँव की रक्षा करती थी - शान्ति और सम्पन्नता। प्रतापगढ़ नाम के एक बड़े साम्राज्य का यह गाँव, एक समुद्र के बुलबुले के समान था। वह दौर जमीनदारी प्रथा का दौर था। चारों तरफ अंग्रेजों का शासन था और प्रतापगढ़ के मुख्य जमींदार (या यँ कहे महाराज), ठाकुर विजय बहादुर सिंह थे।

ठाकुर साहब बड़े नेकदिल इंसान थे। वे सदैव गरीबों की सहायता करते थे। अगर कभी अंग्रेजी सरकार किसी किसान को किसी प्रकार का आर्थिक दण्ड देती, और वह बेचारा स्वयं को असमर्थ पाकर इधर-उधर भटकता, तो ठाकुर साहब उसकी सहायता अपने राजकोष से दण्ड भर कर दिया करते थे। उन्होंने अपनी रियासत में कई विद्यालयों, मंदिरों और धर्मशालाओं का भी निर्माण करवाया था।

कनबतरा में सरयु नदी के किनारे ठाकुर साहब का आलीशान महल था। अंग्रेजी सरकार की एक-दो गाड़ियाँ हमेशा महल के आगे-पीछे मंडराती दिखाई पड़ती थी। एक बड़ा बगीचा और महल के आगे एक बड़ा फव्वारा महल की शोभा बढ़ाते थे। परन्तु फिर भी करोड़ों की सम्पत्ति के मालिक होने के बावजूद, ठाकुर साहब के चरित्र में अहंकार का नामो-निशान न था।

ठाकुर विजय बहादुर सिंह की मृत्यु के बाद उनके गोद लिए गये पुत्र, ठाकुर जयराज बहादुर सिंह ने प्रतापगढ़ की गद्दी संभाली। जनता को अपने छोटे ठाकुर से बड़ी आशाएँ थी, परन्तु छोटे ठाकुर जनता के विश्वासों पर औंधे मुँह गिरे। जब

अंग्रेजों के सामने उनकी दाल न गलती दिखी, तो गरीबों की मेहनत से एकत्रित किया गया धन चूस-चूसकर उन्होंने राजकोष भरना शुरू कर दिया।

गरीब जनता तो पहले से ही छोटे ठाकुर के अत्याचार से त्रस्त थी, उनके क्रोध को दावानल का रूप देने के लिए एक चिंगारी ही काफी थी, परन्तु छोटे ठाकुर जनता के मन में उनके प्रति भरे उद्वेग से अनभिज्ञ थे। और होते भी क्यों न, उन्हें अफीम और नर्तकियों के संसार से बाहर झांकने की फुर्सत कहाँ थी। बस यही हमारे छोटे ठाकुर एक गलती कर बैठे, जिसका परिणाम इतना भयंकर हुआ कि ठाकुर राजवंश की नींव तक हिल गई। आइये जानते हैं - कैसे।

संध्या का पहर था। एक बुजुर्ग किसान दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद, थका-हारा अपने खेत से लौट रहा था। प्यास से बेहाल बेचारा अपने झोपड़ी की ओर चला आ रहा था। रास्ते में ठाकुर का महल पड़ता था। किसान ने देखा, महल की चारदीवारी के भीतर, गौशाले के समीप, मवेशियों के लिए एक कुँआ था। 'भूखा शेर भी तिनका खाए' इस समय उस किसान की स्थिति भी कुछ ऐसी ही थी। उस बेचारे ने आव देखा न ताव, सीधा कुँए की ओर बढ़ गया। अभी बाल्टी भरकर पानी पीने को ही था कि तभी किसी सैनिक ने उस कुँए की ओर बढ़ा और उसके कंधे को पकड़ा। किसान ने पीछे मुड़कर देखा। गहन काले रंग का एक बलिष्ठ पहरेदार वहाँ खड़ा था और उसकी क्रूर, अमानवीय आँखें उस किसान को एकटक निहार रही थी। किसान सकपकाता हुआ बोला, "हुजूर, क्षमा करे मालिक।"

पहरेदार गरजती हुई आवाज में बोला, "किससे पूछकर तूने अंदर आने की हिम्मत की। अब तो तेरा फैसला छोटे ठाकुर ही करेंगे, चल।" उस किसान को छोटे ठाकुर के दरबार में ले जाया गया।

वहाँ कई भारतीय मूल के एवं विदेशी मूल के सैनिक तथा दरबारी, मंत्री इत्यादि विराजमान थे, परंतु इन सब के प्रमुख थे अंग्रेजी सरकार के नवनियुक्त वायसरॉय 'लॉर्ड डलहौजी'। पहरेदार ने छोटे ठाकुर को सारा मामला स्पष्ट करते

हुए कहा - “आप ही इसकी उद्दंडता की सजा निर्धारित करें महाराज, ताकि बेहतर हो।” लॉर्ड डलहौजी के सामने गाँववाले पर स्थापित प्रभुत्व का परिचय देने के इरादे से ठाकुर ने हुक्म सुनाया, “सौ कोड़े।”

तभी एक अंग्रेज सैनिक उठ खड़ा हुआ और बोला, “अंग्रेजी सरकार की नियमावली के अनुसार किसी क्षेत्र की निजी स्थिति को दरकिनार करते हुए वहाँ प्रवेश वर्जित है। ऐसा करने पर दोषी को अपनी सारी जमीन उस क्षेत्र के मालिक के नाम करनी होगी। अर्थात्, इस किसान को अपनी सारी जमीन छोटे ठाकुर के नाम करनी होगी। उसके अतिरिक्त जो दण्ड भी इस किसान पर लागू होगा और मुझे पूरी आशा है कि छोटे ठाकुर ‘अंग्रेजी प्रशासनिक नियमावली’ के विरुद्ध जाने का दुःसाहस कतई नहीं करेंगे। क्यों है न छोटे ठाकुर, क्या मैंने कुछ गलत कहा?”

“नहीं-नहीं बिल्कुल नहीं, हम तो सात पुश्तों से अंग्रेजी सरकार के सेवक रहे हैं, फिर आपके विरुद्ध कैसे जा सकते हैं। आपने जो कुछ भी फरमाया, वह निश्चित ही मुकम्मल होगा”।

यह सुनते ही उस बेचारे बूढ़े किसान के प्राण सूख गए। भयक्रांत किसान गिड़गिड़ाता हुआ बोला, “क्षमा करें मालिक! जमीन न लें, चाहे तो मेरे प्राण ले लें। मेरे गरीब परिवार पर दया करें।”

लॉर्ड डलहौजी गाँववाले और ठाकुर राजवंश के बीच उभरते फूट को देखकर मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे। वह भली-भाँति जानते थे कि यही घटना प्रतापगढ़ से ठाकुर राजवंश की जड़ उखाड़ फेंकने में सहायक सिद्ध होगी। जहाँ अंग्रेजी सरकार को अफीम, गाँजे, तम्बाकू और रुई के कारखानों से भविष्य में काफी मुनाफा होगा। उन्होंने इशारों ही इशारों में छोटे ठाकुर से अंग्रेजी सरकार के समक्ष अपनी राजशाही जगजाहिर करने के इरादे से इस मौके को भुनाना चाहा।

दण्ड की कठोरता को चरम सीमा तक पहुँचाते हुए छोटे ठाकुर ने आखिरी फरमान जारी किया, “इस किसान को पानी तब तक न मिले जब तक इसकी सौ

कोड़े की सजा पूरी न हो। सभा समाप्त होती है”, कहकर छोटे ठाकुर महल में अपने शाही विश्रामगृह की ओर बढ़ गए।

वह बेचारा किसान कोड़ों की मार से छटपटाता रहा। प्यास से विक्षिप्त, पानी की गुहार लगाती उसकी बूढ़ी आँखें मानों दया की भीख माँग रही थी, परंतु ठाकुर साम्राज्य के उन जल्लादों के हृदय में दया नाम मात्र भी न थी। बेचारा बूढ़ा किसान तो पचास कोड़ों में ही परस्त हो गया, उसकी आँखें बन्द हुई और फिर सदा के लिए बन्द हो गई, मगर उन जल्लादों को यह भाँपने में पूरे सौ कोड़ों का समय लगा। बाद में ठाकुर के हुक्म से उसकी लाश को नदी किनारे फिकवा दिया गया। अगले दिन सुबह एक व्यक्ति शौच से निवृत्त होने हेतु नदी किनारे गया, वहाँ उसने बूढ़े किसान का शव देखा। यह देखकर उसने आस-पास के गाँव वालों को इकट्ठा किया। धीरे-धीरे वहाँ देखते ही देखते एक बड़ी भीड़ जमा हो गई। बात गाँव के मुखिया, शिवचरण दास के पास पहुँची, वह मौके पर उपस्थित हुए।

उस किसान की लाश का निरीक्षण करने के बाद उन्होंने कहा, इसे बेरहमी से पीटा गया है। इस उक्त कथन के पश्चात् कुछ समय के लिए सन्नाटा पसर गया। गाँववाले चुपचाप अपने एक साथी भाई की हत्या पर आँसू बहा रहे थे।

गाँव के मुखिया ने उस सन्नाटे को भंग करते हुए पुनः कहा, “गौरतलब है कि इस ज्यादाती का शिकार कल हम में से कोई भी हो सकता है। मुझे छोटे ठाकुर से जाकर बात करनी ही होगी। गाँव की भलाई के लिए अब यही एकमात्र विकल्प है।”

गाँव के एक नौजवान किसान, ‘भगवा, ने कहा, “आप वहाँ अकेले नहीं जाएंगे मुखिया जी, मैं आपके साथ आऊँगा।”

“मेरी चिन्ता मत करें भगवा। मुझे कुछ नहीं होगा, मेरा अनुभव कहता है कि मेरा अकेले जाना ही ठीक होगा। वैसे भी मैं आप लोगों में से किसी को वहाँ ले जाकर किसी तरह का कोई खतरा नहीं मोल लेना चाहता। और इसलिए मेरी

आपसे विनती है कि कृपया मुझे जाने की आज्ञा दें।”

“जैसा आप ठीक समझें, मुखिया जी। भगवा ने उत्तर दिया। गांव वालों की सहमति से मुखिया जी उस दिन शाम को छोटे ठाकुर के दरबार में पहुँचे। छोटे ठाकुर ने मुखिया को देखते की नाक भौं सिकोड़े।

छोटे ठाकुर ने मुखिया जी को भरी सभा में हास्य का पात्र बनाने की मंशा से कहा, “अरे जरा देखिए तो कौन आया है! शिवचरण बाबू हैं, अपने कनबतरा के मुखिया जी। स्वागत सत्कार किया जाए इनका। वैसे भी आपसे मुझे बहुत डर लगता है। कुछ भूल-चूक हो जाए तो क्षमा कर दीजिएगा।

”छोटे ठाकुर, मैं यहाँ आपकी मसखरी का लुत्फ उठाने नहीं आया, एक गंभीर मसले पर मैं आपसे एक महत्वपूर्ण वार्ता करने आया हूँ।”

यह सुनते ही छोटे ठाकुर ने विचित्र सा चेहरा बनाते हुए व्यंग्यात्मक लहजे में कहा, ओह! तो अब गाय-भैंस चराने वाले भी गंभीर बातें करने लगे। अरे भाई! हमारी रियासत में यह सब क्या हो रहा है।” इतना सुनते ही दरबार ठहाकों से गूँज उठा। मुखियाजी खून का घूँट पीकर रह गये।

छोटे ठाकुर ने पुनः कहा, “खैर, हम अपने राज्य में तो गूंगों को भी बोलने का मौका देते हैं। जो कुछ भी है, जल्दी बको। हमारा समय बहुत कीमती है”।

मुखियाजी ने कहा कि “क्या आपने उस किसान की जमीन भी छीन ली। एक बार भी नहीं सोचा कि उसके जाने के बाद उस बेचारे गरीब के परिवार का क्या होगा? यह आपने ठीक नहीं किया छोटे ठाकुर”।

“हाँ सही है, कल शाम की ही बात है। हमने ही उसे सौ कोड़ों की सजा दी थी और उसकी जमीन अपने नाम करवा ली थी” छोटे ठाकुर ने हुंकार भरकर कहा। हम मजबूर थे, अंग्रेजी सरकार के नियमों का उल्लंघन नहीं कर सकते”।

एक बात याद रखिए छोटे ठाकुर, हम गांववालों को सताकर आप सुखी नहीं रह सकते। आज आप जिन अंग्रेजों का पक्ष ले रहे हैं, कल मुसीबत में वे नहीं, हम गांववाले ही आपके काम आएँगे। ये फिरंगी तो बस आपको लूटने आए हैं”।

“बस शिवचरण, मुझे भाषण मत दो। इसके पहले कि मैं तुम्हें धक्के मरवाकर यहाँ से बाहर कर दूँ, तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम खुद ही यहाँ से बाहर हो जाओ।

“मुझे तो अफसोस इस बात का है कि जब तक आपकी आँखें खुलेगी, तब तक काफी देर हो चुकी होगी। हमसे दुश्मनी आपको काफी महँगी पड़ेगी छोटे ठाकुर, काफी महँगी” यह कहकर मुखिया जी महल से बाहर निकलते हुए, कनबतरा की ओर बढ़ गए।

अगले दिल गाँववालों की एक सभा बुलाई गई। सभा को संबोधित करते हुए गाँव के मुखिया शिवचरण दास ने कहा, “प्रिय मित्रजनों, कल मैं छोटे ठाकुर के महल में गया था। बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि कोई बात न बनी। छोटे ठाकुर की दृष्टि में अंग्रेजों के समक्ष हमारा मूल्य शून्य के समतुल्य है। वे हमारी कोई बात सुनने को तैयार नहीं हैं। पुरानी कहावत है मित्रों, “जब घी सीधी अंगुली से ना निकले, तो अंगुली टेढ़ी करनी ही पड़ती है।”

“अब हमें एक नई क्रांति का संचार करना होगा। अपने बाप-दादा की जमीनों को बचाने के लिए अंग्रेजों के साथ-साथ छोटे ठाकुर को भी प्रतापगढ़ से खदेड़ना होगा। इस काम में अहम भूमिका निभाएँगे हमारे युवा किसान भाई, ‘भगवा’ जो आप सभी का नेतृत्व करेंगे। मैं भगवा से पूछना चाहूँगा कि उन्हे कोई आपत्ति तो नहीं।”

“आपत्ति है! छोटे ठाकुर की मनमानी और अंग्रेजों की राजनीति को लेकर बहुत आपत्ति है। पर जहाँ तक अपनों की बात है, मैं अपनी जान पर भी खेल सकता हूँ। आज तो देकर देखिए, जला डालूँगा, मार डालूँगा, काट डालूँगा।”

जोश में भरकर भगवा ने उत्तर दिया ।

“शाबाश बगवा ! मुझे आप सभी गाँववाले से इस कार्य में ऐसे ही उत्साह की आशा है । मुझे उम्मीद है कि आपलोग मुझे किसी भी प्रकार से निराश नहीं करेंगे । अब मैं आपलोग से विनती करता हूँ कि कृप्या नजदीक आकर एक गोलाकार में खड़े हो जाएँ ताकि हम अपनी योजना निर्धारित कर सकें”, मुखिया जी ने कहा ।

तत्पश्चात, रात के उस गहराते अँधेरे में मशालें जुटी । गाँववाले मुखिया जी को घेरकर खड़े हो गए और ध्यान से उनकी योजना सुनने लगे । दूर कहीं किसी सियार के हँकारने की आवाज आ रही थी, हवा सन्नाटे को चीरती हुई कल-कल बहती जा रही थी । परंतु अपने गर्म बिस्तर में सो रहे छोटे ठाकुर को इस बात का अंदाजा भी नहीं था कि इस छोटे से गाँव में एक क्रांति जन्म लेने जा रही है जो प्रतापगढ़ में उनके भविष्य का फैसला करने वाली है ।

अगले हफ्ते बाद, एक रात छोटे ठाकुर दरबारी कार्यकाल से निवृत्त होने के पश्चात अपने भवन में शाही नर्तकियों के नृत्य का आनंद ले रहे थे । तभी एक सैनिक वहाँ दौड़ता हुआ आया और भयभीत सा बोला, “महाराज, गजब हो गया । गाँव वालों ने महल को चारों तरफ से घेर लिया है । उन्होंने सभी सीमाओं को तोड़कर अचानक हम पर धावा बोल दिया है और उनमें से कई तो महल में भी घुस आये हैं ।”

“क्या बक रहे हो, क्या हमारे सैनिक उनसे मुकाबला नहीं कर सके ?” छोटे ठाकुर ने अचरज में पड़कर पूछा ।

“नहीं महाराज वे हजारों की संख्या में थे । उन लोगो ने अचानक ही हमला कर दिया, हम संभल भी नहीं पाए । उन्होंने महल के कुछ निचले हिस्सों में आग लगा दी है । इसके पहले कि आग फैले और गाँववाले यहाँ तक आ जाएँ, समझदारी इसी में है कि आप पीछे के रास्ते से बाहर निकल जाइये, तब तक हम गाँववालो को नियंत्रित करते हैं ।”

“जो करना है, जल्दी करो”, कहकर छोटे ठाकुर नीचे की ओर पिछले रास्ते से भागे। जाते जाते उन्होंने सुना कि किस प्रकार गाँववाले गर्जना करते हुए उनकी सम्पत्ति लूट रहे थे और उस विशाल महल की भव्यता को मिट्टी में मिला रहे थे।

छोटे ठाकुर जैसे ही महल के पिछले दरवाजे से बाहर दाखिल हुए, वहाँ अँधेरे में खड़े कुछ गाँववालों ने उन्हें देखते ही कहा, “अरे रे! वो देखो ! वहाँ काले कंबल में लिपटा कौन भागा जा रहा है ? कहीं छोटे ठाकुर तो नहीं ! पकड़ो, पकड़ो, जल्दी पकड़ो ! लेकिन इसके पहले कि गाँव वाले कुछ समझ पाते, छोटे ठाकुर खेतों के रास्ते अँधेरे में गायब हो गये।

अगले दिन दोपहर को किसी तरह हिम्मत करके छोटे ठाकुर अपने महल पहुँचे। महल का बाहरी परिदृश्य खंडरनुमा लग रहा था। जगह-जगह चहारदीवारी टूटी पड़ी थी। फव्वारा किसी खेत के हल के समान प्रतीत हो रहा था। शाही गोशाले में गायों के गोबर के अतिरिक्त अन्य कुछ भी न था।

तत्पश्चात्, छोटे ठाकुर ने महल के भीतर प्रवेश किया। राज दरबार की सजावट और सौंदर्य बिखरी पड़ी थी। जगह-जगह भव्य दीवारों पर हस्तकला के उत्कृष्ट नमूने, जले हुए निशानों से पटे पड़े थे। ठाकुर साम्राज्य की गौरवशाली गाथा अब अंतिम चरण में थी।

तभी पीछे से आवाज आई “छोटे ठाकुर!” पीछे मुड़कर छोटे ठाकुर ने देखा कि राजदरबार का मुंशी, एक अंग्रेजी सरकार सैनिक के साथ महल के मुख्य द्वार पर खड़ा था। मुंशी ने कहा, अंग्रेजी सरकार के नवनियुक्त वायसरॉय लार्ड डलहौजी ने एक फरमान जारी किया है, जिसके अनुसार आपको प्रतापगढ़ की कमान अंग्रेजी सरकार के हाथों में सौंपनी होगी। कल हुए हादसे को मद्देनजर रखते हुए, अंग्रेजी सरकार प्रतापगढ़ में बीते आपके शासनकाल से अत्याधिक असंतुष्ट है। इसके अतिरिक्त ‘डॉक्ट्रीन आफ लैप्स’, का सिद्धांत भी आप पर लागू होता है, जिसके मुताबिक किसी भी राज्य के गोद लिए पुत्र को राजसिंहासन पर बैठने का अधिकार नहीं है। अर्थात् आपको सारी शेष सम्पत्ति और जमीन-जायदाद

अब अंग्रेजी सरकार के नाम करनी पड़ेगी और अगले चौबीस घंटों में इस महल को खाली करना होगा।

एक पल के लिए छोटे ठाकुर स्तब्ध रह गए, फिर खुद को संभालते हुए बोले, “अभी, इसी वक्त मैं अपनी सारी सम्पत्ति अंग्रेजी सरकार के नाम करता हूँ”। कहकर उन्होंने अपने सारे आभूषण और कीमती हीरे-जवाहरात उतार कर वहीं जमीन पर रख दिए और महल से बाहर निकल गए।

संध्या समय, गांव से सटे एक निर्जन स्थान पर एक झोपड़ी में शिवचरण दास, भगवा के साथ, आगे की रणनीति पर विचार कर रहे थे। तभी दीये के मद्धिम प्रकाश में मुखिया जी ने झोपड़ी के द्वार पर खड़ी एक आकृति देखी। अकस्मात ही उनके मुँह से शब्द फुट पड़े, “छोटे ठाकुर आप! आइये अंदर आइये, यहाँ बैठिए।

भगवा, ने अपनी म्यान में से तलवार खींचते हुए कहा, “गद्दार कमीने, मैं तुझे मार डालूँगा”। “चुप रहो भगवा, मुझे बात करने दो” मुखिया जी ने आदेश दिया, “आइये यहाँ बैठिए छोटे ठाकुर। हाँ, तो यह बताइये छोटे ठाकुर अब आपकी जमीन जाने के बाद आपको कैसा अनुभव हो रहा है।

“मुझे माफ कर दीजिए मुखिया जी, मेरी आँखें खुल गईं। मैं तो अपनों से ही बैर कर बैठा था। मुझे माफ कर दीजिए, “कहकर छोटे ठाकुर मुखिया जी के पैरों में गिरकर रोने लगे।

“सुबह का भूला अगर शाम को घर लौट आए तो उसे भूला नहीं कहते। मैं तो बस यही चाहूँगा कि अंग्रेजों के खिलाफ हमारे अभियान में अब आप भी हमारा साथ दें। उम्मीद है कि आपकी जमीन फिर शायद आपको हम वापस दिला सकें”। मुखिया जी गले लग गए। फिर उन्होंने कहा “मुझे खुशी है कि आपने मुझे माफ कर दिया। आज से इस अभियान में मैं आपके साथ हूँ”।

भगवा की आँखों से आँसू बह निकले। छोटे ठाकुर खुद को अपनों के बीच

पाकर फूले न समा रहे थे और मुखिया जी की खुशी का तो ठिकाना ही न था।

अगले दिन गाँव की पथरीली जमीन पर छोटे ठाकुर खेतों की ओर जाते दिखाई दिए। कमर में सफेद धोती, कंधे पर लाल गमछा और हाथ में एक कुदाल लिए वह बड़े चले जा रहे थे। जिन हाथों ने कभी कोड़े चलवाए थे, वही हाथ आज अपने पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए उठे थे।

छोटे ठाकुर के मन की शांति और उनके चेहरे की मंद मुस्कुराहट उनकी अपार संतुष्टि और असीम हर्ष का परिचायक थी।

+++++

विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखानेवाला कोई विद्यालय आज तक नहीं हुआ।

- प्रेमचंद -

बेटी



राजेन्द्र कुमार
पर्यवेक्षक

भारत माता की तुम हो बेटी, धरती पर आई, लिये सुहावन,
शक्ति का है रूप लिए तू, गुण भी तेरा अति मनभावन।
बाबा की तू राजदुलारी, मामा की भी प्यारी-प्यारी।
घर-आँगन में पढ़ती-खेलती, टीचर की भी न्यारी-न्यारी।
तेरे रहने से घर-आँगन में, दीप जलाना नहीं पड़ता।
खुद रहती है तू तो रौशन, रौशन तुझसे है जग रहता।
जाती जब तू सासु-घर को, भूल जाती तू अपने घर को।
प्यार के बगिया में खिलकर तू, धन्य समझती है अपने को।
सास-ननद से तू मिलकर, नया-नया घर-बार सजाती।
कौन सा धन मिल जाता तुझको, अपने जन को तू भूल जाती।
जना है श्रृष्टि तेरे गर्भ से, रौशन है दुनियाँ तेरे दम से।
माँ के रूप में तू ही बेटी, दूध है पिलाती मम-तन से।
है पागल मानव आज का, पैसों के पीछे भाग रहा।
बहु को लाने के लिए, बेटों को भी तौल रहा।
दहेज-प्रथा के अभिशाप से, बेटी को गर्भ में मार रहा।
दुनियाँ कल की कैसी होगी, यह न कातिल समझ रहा।
कहता है कुमार तू हिम्मत कर, पढ़ा बेटी विद्वान बना।
पाल उसे बेटों की तरह, लक्ष्मीबाई या मीरा बना।
दूर्जनो को देने से अच्छा, घर की बेटी, बेटा बने।
इंदिरा गांधी की तरह भारत माता की शान बने।
ऐसा हुआ तो दुनिया वालों, बेटी का स्वतः मान बढ़ जाएगा।
दुनियाँ कल की तेरी होगी, दहेज प्रथा मिट जायेगा।

+++++

जिस क्रोधाग्नि को तुम शत्रु के लिए प्रज्ज्वलित करते हो,
वह बहुधा तुम्हें ही अधिक जलाती है। -चीनी लोकोक्ति-

हलधर किसान



राजेन्द्र कुमार
पर्यवेक्षक

तीखे कांटों से भरा, है हलधर का संसार।
हल रहता साथी सदा, बस है माटी से प्यार॥

सपनों में ही खिल रहे, पीले सरसों के फूल।
खेत सूख बंजर भई, मिले धूल में फूल॥

आँधी खेल बिगाड़ती, मौसम दे अभिशाप।
अनथक परिश्रम कर रहा, जाड़ा, गर्मी हो या बरसात।

सूखी फसलें देखकर, उदास भयो किसान।
फैली गर्मी खेतों में, जल उठा खलिहान॥

चुल्हा अब कैसे जले, कौड़ी भी नहीं तीन।
भूखे बच्चे बिलख रहे, कैसे बीते दिन।

हाल देख तब हलधर की, जाग उठा भगवान।
लगे विचारने जलधर भी, ढूँढ़ा एक निदान॥

बदल गया मौसम अहो, आसमां बादल छाय।
बरसे पानी खेत में, हलधर नाचे गाय॥

बजते घुंघरू बैल के, मानो गाये गीत।
चप्पा-चप्पा जोत लिये, पा हलधर की प्रीत॥

देता पानी खेत को, जागे सारी रात।
चुनकर कांटें, बाँटता, फूलों की सौगात॥

देता सबको अन्न जो, सहता मन में पीर।
कर्म साधना में लगा, न होता कभी अधीर॥

+++++

बिना परिश्रम के कोई भी मुल्यवान् वस्तु प्राप्त नहीं की जा सकती।

-एडीसन-



हिन्दी पञ्चवारा समारोह, २०११ का उद्घाटन - दीप प्रज्वलित करते हुए श्री प्रेमन दीनाराज, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना एवं श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल, महालेखाकार (ले० एवं ह०) बिहार, पटना।



हिन्दी पञ्चवारा समारोह, २०११ के उद्घाटन समारोह के सुअवसर पर धन्यवाद ज्ञापन करते हुए माननीय वरीय उप महालेखाकार, बिहार, पटना श्री राम हिता।



हिन्दी पखवारा समारोह, २०११ का उद्घाटन समारोह के सुअवसर पर पुष्प गुच्छ से श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल, महालेखाकार (ले० एवं ह०) महोदय का स्वागत करते हुए श्री० हाशिम अंसारी, वरीय लेखा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)।



हिन्दी पखवारा, २०११ के समापन समारोह पर अपना उद्गार प्रकट करते हुए माननीय महालेखाकार (ले० एवं ह०) बिहार, पटना श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल।